CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

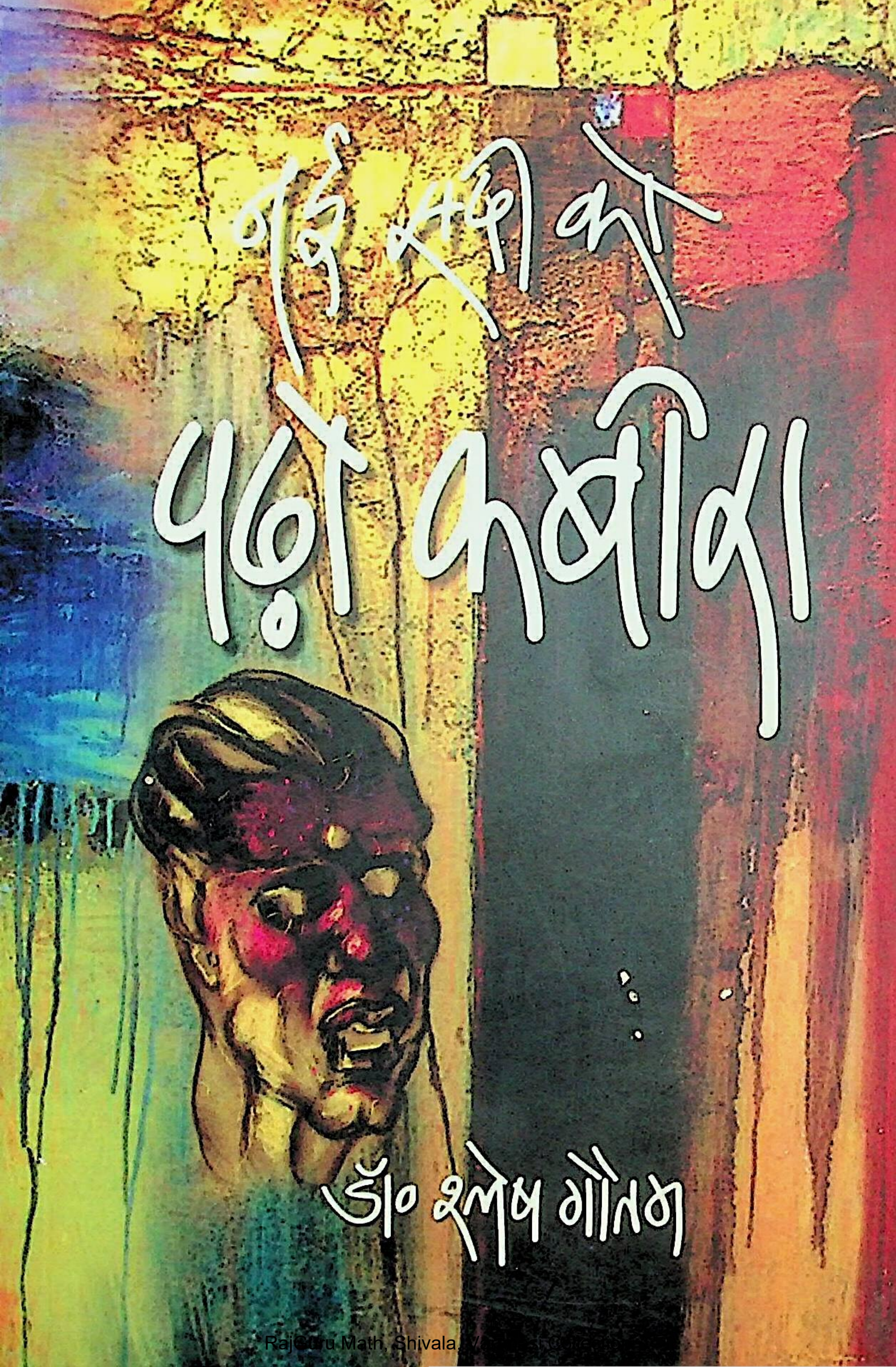


Rajguru Math, Shivala,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# नई सदी को पढ़ो कबीरा

डॉ० श्लेष गौतम

इंक पब्लिकेशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वाधिकार सुरक्षित है - इस पुस्तक के किसी भी अंश अथवा सामग्री को बिना अनुमति के पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रकाशक से बग़ैर किसी लिखित अनुमति प्राप्त किये, इसकी नक़ल बनाना, फ़ोटोकॉपी या अन्य सूचना संबंधी माध्यमों से प्रकाशित करना क़ानूनन अपराध है।

ISBN : 978-81-947725-7-6
कॉपीराइट : लेखकाधीन
पब्लिशिंग-राइट : इंक पब्लिकेशन
प्रथम संस्करण : दिसंबर 2019
मूल्य : 160 रूपये

प्रकाशक : इंक पब्लिकेशन
आवरण चित्र : प्रो० अजय जेटली
मुद्रक : प्रनव

Published by : Ink Publication
Office : 333/1/1K, Naya Pura, Kareli, Prayagraj - 211016
email : publicationink@gmail.com
Mobile : 9455400973, 8318034587

Title : Nai Sadi ko Padho Kabira
Poet : Dr. Shlesh Gautam
Cover & Text Design : ink Art & Creative Team

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है

कबीरा के 'ढाई आखर'

एवं

प्रिय मित्र तथा लेखक कर्नल गौतम राजऋषि को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**डॉ० श्लेष गौतम** (Dr. Shlesh Gautam : Poet & writer)
जन्म : 21 दिसम्बर/प्रयागराज (इलाहाबाद)
शिक्षा : नेट (यू.जी.सी) व डी.फिल.(विधि-इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
संप्रति : सहायक आचार्य (बी.ए.एलएल.बी. विधि-विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

**सम्मान व पुरस्कार : -**

□ काव्य संग्रह 'चाँद सुलगता है' के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से डॉ० हरिवंश राय बच्चन युवा गीतकार सम्मान 2012

□ इटावा हिन्दी सेवा निधि का 'शिशु वल्लभ अलंकरण'

□ अखिल भारतीय मंचीय कवि पीठ का 'जनकवि कैलाश गौतम सम्मान'

□ भारतीय लोककला महासंघ द्वारा 'लोककलाविद् सम्मान'

□ उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान का 'रमन लाल अग्रवाल' नामित पुरस्कार/सम्मान

□ इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक्सलेंस अवार्ड

इसके अतिरिक्त कविता/संचालन/पुस्तक पर अनेकानेक संस्थानों द्वारा सम्मान/अलंकरण/प्रशस्ति पत्र।

□ कविताओं के लोकप्रिय कार्यक्रम 'वाह-वाह क्या बात है' व 'बहुत खूब' में कई बार काव्यपाठ।

□ संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार नई-दिल्ली द्वारा जूनियर फेलोशिप पूरी की।

□ संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई-दिल्ली द्वारा अमूर्त कला धरोहर पर फेलोशिप

**कवि सम्मेलन/मंचीय भागीदारी : -** राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों/महोत्सवों में संचालन/काव्य पाठ/संयोजन देश के सभी प्रमुख कवियों के साथ अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में भी काव्य पाठ।

**प्रकाशन : -** चाँद सुलगता है (काव्य संग्रह), आज के दोहों में भारत की तस्वीर (दोहा संग्रह-भारत के प्रमुख दोहाकारों के साथ), एक दीपावली सात जुआरी (गद्य व्यंग्य संग्रह), हमै तिरंगा चाही (भोजपुरी काव्य संग्रह), आदमकद बौने (काव्य संग्रह), सुनहरा कल (मुक्तक संग्रह)

**संपादन : -** कैलाश गौतम समग्र (तीन खण्ड) एवं कैलाश गौतम की प्रतिनिधि रचनाएँ

पता : 135 एम.आई.जी. प्रीतमनगर, प्रयागराज (इलाहाबाद)- 211011 उ०प्र०
Mo. 9415324228,7905909598/ email: shlesh.gautam@gmail.com



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# श्लेष गौतम की कविताएँ

श्लेष गौतम की कविताओं से गुज़रते हुए उनके जनकवि पिता कैलाश गौतम की याद आना भावगत प्रक्रिया तो है ही, कविता की अगली परम्परा की खोज भी है। श्लेष गौतम की कविताएँ भी लोक की ओर मुंह किए हुए खड़ी मिलती हैं। एक तरफ़ उनमें निजी प्रतिक्रियाएँ हैं तो दूसरी तरफ़ सामाजिक चेतना। श्लेष मंच पर स्थापित हो चुके हैं, जनमानस में अपनी पैठ बना रहे हैं किन्तु आलोचना के निष्कर्ष पर उनका कसा जाना शेष है। श्लेष गौतम के लिए श्रेयस्कर यही होगा कि आलोचना के चौखटों से बाहर वे अपनी जनप्रिय छवि इतनी बड़ी कर लें कि आलोचक की तराजू की वे चिन्ता ही न करें। शुभाशीष के साथ।

दिल्ली।

– ममता कालिया



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# नई सदी को पढ़ो कबीरा :
## नवगीत के भविष्य के प्रति आश्वस्त करता एक संग्रह

उठो कबीरा, बढ़ो कबीरा
नई सदी को पढ़ो कबीरा
शब्दों को हथियार बनाकर
फिर दुनिया से लड़ो कबीरा

नवगीत का यह मुखड़ा, 'नई सदी को पढ़ो कबीरा' संग्रह का थीम नवगीत है। किसी भी रचनाकार का मूल्यांकन करना हो तो सबसे पहले यह देखना होगा कि वह लिखे हुए या छपे हुए शब्दों में कितनी देर और कब तक ठहरता है। प्रायः यह देखा गया है कि अपवादों को छोड़ दें तो जो कवि, कवि सम्मेलन के मंचों पर जा रहे हैं और जिनकी क़िताबें भी छपकर आ रही हैं, वह मंचों पर तो बहुत कामयाब दिखते हैं पर जब कागज़ पर आते हैं तो बहुत निराश करते हैं। मंचों पर तो भंगिमाएँ होती हैं, चीख-पुकार होती है, कंठ होता है पर कागज़ पर यह सब कुछ नहीं होता केवल शब्द होते हैं। 'नई सदी को पढ़ो कबीरा' के रचनाकार डॉ० श्लेष गौतम इस बात का अपवाद हैं। वह मंचों पर जितना धूम मचाते हैं, कागज़ पर भी उतनी ही भरपूर उपस्थिति दर्ज़ कराते हैं। श्लेष को साहित्य की कसौटियों की गहरी समझ है, वह काव्य समारोहों पर शान से जाते तो हैं पर उसकी चमक-दमक में कहीं खोते नहीं। यद्यपि कवि सम्मेलन भी जन से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम रहे हैं, पर मौजूदा दौर में उसकी प्राथमिकताएँ बदल गयी हैं। अब तो वही कवि दूर तक और देर तक याद रखा जायेगा जो छपे हुए शब्दों की दुनिया में भी मज़बूती से क़दम जमाएगा। श्लेष के पहले संग्रह 'चाँद सुलगता है' ने भी यह उम्मीद जगायी थी और 'नई सदी को पढ़ो कबीरा' के संग्रह के आने तक यह उम्मीद कुछ और अधिक पुष्ट ही हुई है। इसकी स्पष्ट वजह यह है कि उन्होंने कवि सम्मेलनों में मिलने वाले पारिश्रमिक से कहीं अधिक महत्व पत्र-पत्रिकाओं को दिया है। सतत् रचनाशील रहे हैं, निरन्तर अपने लिखे और छपे हुए शब्दों से विस्मय में भी डालते रहे हैं। कवि



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलनों में पढ़ने वाली और पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली कविता के दो चेहरे उनके पास नहीं हैं। वह जिन रचनाओं के साथ मंचों पर जाते हैं, वही रचनाएँ छपे हुए रूप में भी पढ़ने को मिलती हैं। इस अर्थ में उन्होंने कीर्तिशेष कवि और अपने पिता कैलाश गौतम की काव्य परम्परा को आगे ही बढ़ाया है। गौतम जी भी अपने पाठकों और श्रोताओं के बीच किंचित भी छल नहीं करते थे, अपना एक ही चेहरा रखते थे। श्लेष को जनसंवाद अपने पिता से ज्यों का त्यों मिला है। उनके सामाजिक सरोकार, एक रचनाकार के तौर पर उनकी भूमिका, विसंगतियों पर पैनी नज़र, उन्हें कविता के नाम पर चल रही भेड़चाल से अलग करते हैं। उनके नवगीत सृजन कर्म में भीड़ का आदमी ही केन्द्र में है। संकलित नवगीत में जीवन राग के उत्कृष्ट नवगीत हैं। इनमें रोज़मर्रा का संघर्ष तो है ही उत्सवधर्मिता की वह दीप्ति भी है जो रचनाकर्म के लिये एक बुनियादी शर्त होती है। उनकी कविताओं में 'राग' और 'आग' दोनों ही अपने सम्पूर्ण आवेग के साथ मौजूद मिलते हैं। उनके व्यंग्य में भी एक करुणा होती है, जब तक लगभग छटपटाकर यह कहते हैं -

पढ़े लिखों की चालाकी से फूट गयी तकदीर
ढाई आखर की बुनियादें हिलने लगीं कबीर।।

यह अकारण नहीं है कि बार-बार कबीर उनकी रचनाओं में अपने विद्रोही तेवर के साथ दस्तक देते हैं। इस सन्दर्भ में श्लेष का एक दोहा भी शिद्दत से याद आता है -

लिखा किया रह जाएगा, रहता नहीं शरीर
इसीलिए मरते नहीं, तुलसी-सूर-कबीर।।

वह अपने पुरखे कवियों को अपने रचना संसार में प्रकाश स्तम्भ की तरह स्थापित करते हैं। उनके पास नवगीत की विलक्षण भाषा है, वह निराला की 'नव गति' को अपने नवगीतों से जोड़ते हैं, तभी तो कहते हैं -

नयी धुनों पर गीत पुराने गाये जायेंगे
सत्ता के गलियारों में 'री-मिक्स' सुनायेंगे।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयी ज़िल्द में पुरानी किताब या नयी बोतल में पुरानी शराब की इससे बेहतर अभिव्यक्ति और क्या हो सकती है? अब तो आदमी का भी क्लोन बनकर आ गया है। जीवन सूत्र तक रीमिक्स किये जा रहे हैं। मौलिकताओं को वनवास सा मिल गया है, बस आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होने के लिये समाज और हमारा समय बौराया हुआ है। ऐसी विकट परिस्थिति में 'जेनुइन' रचनाकारों की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। श्लेष भी किसी दबाव या फ़ैशन में गीत नहीं रचते बल्कि कविता की रूह से रिश्ता रखते हैं, फिर कबीर का एक दोहा याद करें-

सुखिया सब संसार है, खावे और सोवै
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवै

डॉ० श्लेष गौतम कहते हैं -
आँखें बादल बनकर बरसीं तब कविता कह पाए हैं
एक खुशी को बरसों तरसीं तब कविता कह पाए हैं।

कविता को जब तक जीवन मूल्य के रूप में नहीं लिखा जाएगा तब तक ऐसी पंक्तियाँ नहीं रची जा सकतीं। एक अच्छी कविता के लिये अपनी नींदों का लहू भी बहाना होता है, काली-अँधेरी रातों में जागना होता है और फिर कविता की सुबहों का चमकता हुआ सूरज उगाना होता है।

सान्द्र संवेदनाओं का नमक जब तक हमारी रचनाधर्मिता में सांस नहीं लेता, बात नहीं बनती। तिल-तिलकर अपने को जलाकर रोशनी की गलियाँ तलाश करनी होती हैं। इसी प्रसंग को जब टटोलते हैं तो श्लेष का रास्ता बहुत चुनौती भरा लगता है। वह एक बड़े पिता की संतान हैं इसलिए उनका कविता का रास्ता कुछ और भी अधिक कठिन था, पर गहरे संतोष का विषय यह है कि वह अपना कविता का सफ़र बख़ूबी तय कर रहे हैं। उनके सृजन संघर्ष में कविता और जीवन का ख्याल भी अपनी गहरी अर्न्तदृष्टि के साथ व्यंजित होता है। कैलाश गौतम जी लिखते हैं-

जाने कितनी गहराई है यार तुम्हारी आँखों में
एक और मीराबाई है यार तुम्हारी आँखों में।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो उनकी धरोहर को जीने और सहेजने वाले श्लेष लिखते हैं-

नदी पहाड़ी झरना सागर
ताल हुए जाते हैं
याद तुम्हारी, जेठ में
नैनीताल हुए जाते हैं।

जब हम धरोहर को जीने की बात करते हैं तो सहज ही श्लेष द्वारा स्थापित 'कैलाश गौतम सृजन संस्थान' का मूर्त रूप हमारे सामने आ जाता है, जहाँ कवि सम्मेलन नहीं कविता सम्मेलन होते हैं और काव्य मंचों को एक परिष्कार दिया जाता है और उनके ऐसे बारीक तंतुओं से बुने गीत भी बहुत मनोयोग से सुने जाते हैं-

बोलो राम कहाँ ढूँढोगे, शबरी जूठे बेर लिये
दुनिया आगे बढ़ी जा रही, मन में जब अंधेर लिये।

निश्चित ही 'नई सदी को पढ़ो कबीरा' का प्रकाशन एक सुखद परिघटग है, जो नवगीत के भविष्य के प्रति पूर्णतः आश्वस्त करता है।

- यश मालवीय



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# संस्कार भी होते हैं कुछ

हिन्दी नवगीत की पगडंडियों पर अमिट पदचिह्न छोड़कर जानेवाले भाई कैलाश गौतम अक्सर यह कहा करते थे कि नवगीत में पहचान वही बना पाएगा, जो नये छंदों का साँचा तैयार करेगा। आज श्लेष के नवगीतों से गुजरते हुए बारंबार यह अनुभव होता रहा कि कोई भी जीवंत विधा अपनी सारी सर्जनात्मक पूँजी किसी एक पीढ़ी को ही सौंपकर निश्चिंत नहीं होती। वह एक लहर से दूसरी लहर पैदा करते हुए आगे सरकती है। इस विकास क्रम में उसकी भाषा, उसका कथ्य, उसका प्रतिपाद्य सब कुछ बदलता जाता है। टोकते तो हम भी थे, मगर हमारा तेवर कुछ लखनवी अंदाज़ का था। लेकिन नयी पीढ़ी कुछ हरियाणवी शैली में यों बोलती है-

जुगनू होना अच्छा है पर हो तो आखिर जुगनू ही रोज़-रोज़ सूरज को गाली देना बेटा ठीक नहीं।

इन दो पंक्तियों में ही आज के पूरे राजनीतिक परिदृश्य के टुकड़े-टुकड़े गैंग से लेकर पुरस्कार वापसी गैंग तक सारे पात्र-कुपात्र नप गये हैं। समर्थ कवि की यही पहचान है कि वह कम से कम शब्दों में सटीक बात कह दे। यह पूरा गीत आज की वस्तुस्थिति का पक्का दस्तावेज़ है।

एक जगह श्लेष मानते भी हैं कि 'शब्द हुए जब संस्कार, हम तब कविता कह पाये हैं।' इस पंक्ति को आज के कोरोना-काल में पढ़ना तब विशेष अर्थ देता है, जब हम देखते हैं कि कविता के केंचुए आभासीय पटलों पर हज़ारों हजार की संख्या में बिलों से निकलकर सोशल मीडिया पर छा रहे हैं। अपनी विद्यालयी शिक्षा में काव्य की सुगंध से वंचित रह जानेवाली नयी पीढ़ी के लिए यह आमद रोचक है। पिछली आधी सदी में छंदमुक्त कविता के घटाटोप से आतंकित युवा पीढ़ी को तब अपनी जमीन मिलती है, जब वह इन पंक्तियों को पढ़ती है-

छुआ-छुअल्ली आइस-पाइस यादों वाली दुनिया।
हुए नहीं जो पूरे अबतक, वादों वाली दुनिया ।।

प्यार एक सदाबहार विषय है कविता के लिए। इसका वैविध्यपूर्ण उदात्त रूप हमारे पूर्वज कवियों ने बड़ी बारीकी से उकेरा है। इसके दोनों पक्ष यानी मिलन



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और विरह पर बहुत कुछ कहा गया है, फिर भी बहुत कुछ आनेवाली पीढ़ियों के कहने के लिए रह गयी है। प्यार वही है, उसका रूपरंग बदल गया है। नयी पीढ़ी का प्यार कुछ-कुछ ऐसा होता है-

दो का एक टिफिन हो जाता छुप-छुप कर खाते थे खाते थे बढ़ जाता था स्वाद अजब खुशबू से भर जाते थे रोम-रोम पुलकित औ झेंप के लाल हुए जाते हैं याद तुम्हारी जेठ में नैनीताल हुए जाते हैं।

मुझे 'संतोष' है कि श्लेष ने आज के जीवन के सारे पहलुओं को अपने गीतों में छुआ है और उन मदान्ध आलोचकों को आईना दिखाया है जो मानते थे कि गीतों में आधुनिक जीवन के सारे पहलू नहीं समेटे जा सकते। आज कैलाश भाई होते तो यह देखकर खुश होते कि उनकी अगली पीढ़ी गीत की डाल में नये टूसे की तरह दमक रही है। मुझे यह कहने की अनुमति दी जाए कि प्रयागराज की नयी काव्य-त्रिवेणी पर आज यश, तुषार और श्लेष के हस्ताक्षर हैं।

देहरादून

- डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अपने अंदर के कबीर की खोज

अब छह सौ बरस बाद कबीर तो ज्यों-के-त्यों धरती पर आने से रहे! उनकी गुहार लगा कर क्या कर लोगे श्लेष? वैसे, कबीर भारतीय उपमहाद्वीप के समाजों को छोड़ कर, इन छह सौ साल में, कहीं गए भी नहीं। वे यहीं हैं। यह बात मैं कबीरपंथी होकर नहीं, कबीरधर्मी होकर कह रहा हूँ। हालात बद से बदतर होते हुए हर दिशा में बदले हैं, पर कबीर के दिशा-निर्देश नहीं बदले। उनका धर्म नहीं बदला। कबीर सुविधा-सम्पन्नों को रास नहीं आते, क्योंकि दुखिया की दुविधाओं का बखान करते हैं।

अगर श्लेष गौतम आज के हाल देखकर कबीर की गुहार लगाते हैं, तो वे अपने अंदर के कबीर को ही खोजते हैं। उस बिना पोथी-ज्ञान वाले ढाई आखर को खोजते हैं, जो समाज से विलुप्त होता जा रहा है। पोथियों के अम्बार लगे हैं, लेकिन पढ़ने की फुर्सतें कहां हैं? ज्ञान-गुरु की खोज में घाट की सीढ़ियों पर क्यों लेटें, गूगल-गुरु एक क्लिक में ज्ञान दे देगा। पंडित और ज्ञानी कोई क्यों होना चाहेगा, जब घोड़े के ढ़ाईवें घर में बैठा अज्ञान झूठ की मलाई से मालामाल कर देगा।

जब ये पांडुलिपि मेरे हाथ में आई तो मैंने सबसे पहले, सबसे पहली कविता पढ़ी और श्लेष के अंदर बैठे के समाज का सहज, स्वाभाविक, ईमानदार आकलन अपने अंदर उनकी कबीर भैरवी की तरह गुंजाया। मैंने उस गीत को दो बार पढ़ा। उसकी पहली पंक्तियाँ हैं -

उठो कबीरा बढ़ो कबीरा, नई सदी को पढ़ो कबीरा,
शब्दों को हथियार बनाकर, फिर दुनिया से लड़ो कबीरा!

कबीर, यानी जन-जन के कबीर, आज के कवियों मन के कबीर, अपने-अपने आभ्यंतर के हर कबीर के प्रति एक जागरूकता से भरा उद्बोधन, श्लेष ने इस गीत में किया है। कितने नाजुक और संवेदनशील मुद्दे उठाए हैं, आप गीत में स्वयं देखिएगा।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर मैंने संकलन की अंतिम कविता को पढ़ा। पहली दो पंक्तियाँ पढ़ कर सोचने लगा कि उनके पिता ने जब उनका नाम रखा होगा, तो क्या सोचकर श्लेष रखा होगा! जनकवि कैलाश गौतम बड़े कवि थे और जानते थे कि हर बड़ी कविता के दो पहलू होते हैं। उसकी दो अर्थ-छवियाँ तो निश्चित रूप से होती हैं। अगर अनेक अर्थ छवियाँ नहीं हैं तो कविता सपाट हो जाती है। शब्द एक, अर्थ अनेक, होने पर श्लेष कहलाता है, सो उन्होंने नाम रख दिया श्लेष। कविता की पहली पंक्ति में एक शब्द में श्लेष है। वह शब्द है 'ग्रहण'। पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

ज़िन्दगी के हर ग्रहण को प्यार हम करते रहे,
जो मिला, जब भी मिला, हँस कर सदा लेते रहे।

अब ग्रहण करना, एक तो होता है किसी से प्राप्त करना, दूसरा अर्थ है ग्रहण लगना, किसी की गतिविधि का कलंकित और दूसरों के लिए हानिकारक हो जाना। इन दोनों प्रकार के ग्रहण को श्लेष प्यार देते रहे, क्योंकि कबीर के ढाई आखर को सबसे बड़ा शास्त्र मानते हैं। तुमने हमारी ज़िन्दगी में ग्रहण लगाया, वो भी प्यारा है ...और तुमने हमारी ज़िन्दगी को जो कुछ दिया, हमने ग्रहण किया, वो तो प्यारा है ही। एक ग्रहण में कष्ट को अपनाने की महानता है, तो दूसरे में, दूसरे के उपकार के लिए कृतज्ञता है। महानता और कृतज्ञता के बीच में शिकायत का बोध नहीं है। झूठ की बुनियाद वाली ज़िन्दगी नहीं है। फूल और काँटे कड़वे-कसैले हों, या खट्टे-मीठे, सब चख कर देख लिए। वफ़ा के साथ आई बेवफ़ाई देख ली। दूरियों में नज़दीकियाँ और नज़दीकियों में दूरियाँ और इसके बाद हुई जगहँसाई भी देख ली। सारे नज़ारे और सूरज, चाँद सितारे उन्होंने गौर से देखे। उनकी करुण-गाथा छोटी नहीं है। अनसुनी और अनकही बहुत है, उलझी हुई है, पर लोग समझते हैं कि कहानी सुलझी हुई है।

श्लेष जब कविसम्मेलन की दुनिया में बाहर निकलते हैं, बहुत सुलझे, बहुत समझदार, बहुत आत्मीय और बहुत सक्रिय दिखाई देते हैं, लेकिन अपने समय के हर अच्छे कवि की तरह वे भी उलझनों के बीच जीते हैं। तनहाई उन्हें



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत कुछ ऐसा देती है, जो उनके पिता की परम्परा का है। बहुत कुछ ऐसा जो उनके समकालीनों का है। बहुत कुछ ऐसा जो छह सौ साल पुराने कबीर का है।

निराशा के दृश्य सामाजिक जीवन में दिखाई देते हैं, लेकिन फिर भोर होती है। उसके हिस्से में आई टूटे हुए आज जैसी ज़िन्दगी, मसलों को फिर से सुलझाने आ जाती है और प्यारी लगती है। लगता है कि इसे गले लगना ही होगा, सारे सोच, फिकर, सशपंज, रंज, ग़म को भूलकर। कवि का वही कृतज्ञता का भाव जो 'ग्रहण' में था, बना रहता है। वह ज़िन्दगी से कहता हैं –

कर्ज है साँसों का तेरा, माँग लेना जब हो मन,
एक बस आवाज़ देना और ले जाना ये तन।

अब मेरे प्यारे श्लेष, अंतिम दो पंक्तियों में तुमने 'श्लेष' की मर्यादा न रखते हुए, बड़ी सपाट बात क्यों कह दी? माना कि इसमें भाषा का लाक्षणिक प्रयोग है, पर ज़िंदगी को इतनी छोट कैसे दे सकते हैं। यह एक ध्रुव-सत्य है कि हर किसी को अंतिम घाट पर जाना होता है, लेकिन ऐसे कैसे जाएँगे? न हम कबीर को जाने देंगे, न हम श्लेष को जाने देंगे। संसार में जो शेष होगा, वह भी श्लेष होगा।

पहली और अंतिम कविता के बीच में जो कविताएँ हैं, उन्हें मैं पढ़ चुका हूँ, लेकिन आपके साथ पुनः पढूँगा, पुस्तक प्रकाशित होने दीजिए। अभी तो मैं अपने मन की यह छोटी-सी बात, अपने ढाई आखर के साथ उस तक पहुँचा दूँ। श्लेष डियर, खूब जिओ और इसी तरह खूब अच्छा-अच्छा लिखते-सुनाते रहो। अनंत शुभकामनाएं।

– अशोक चक्रधर



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# 'मेरी बात' और मेरे भीतर का 'कबीर'

'नई सदी को पढ़ो कबीरा' पुस्तक होने के साथ-साथ मेरे लिए या मेरी अंतर चेतना, मेरे अंतर्मन की वाह्य अभिव्यक्ति भी है और मुझे ऐसा लगता है कि कोई भी दौर हो, काल हो, समय हो, परिस्थितियाँ हों, हमको हर हाल में अपने भीतर के कबीर को बराबर तलाशते रहना चाहिए बराबर उससे संवाद करते रहना चाहिए और जितना हो सके कबीरा के उस 'ढ़ाई आखर' को जितना हो सके उतनी बार या उतने तरीके से, उसे नए तेवर फ्लेवर और कलेवर के साथ लेकर दुनिया के इस माया बाज़ार से और में सकारात्मक और रचनात्मक संघर्ष करना चाहिए। अपने भीतर के कबीर को तलाशने का नाम है 'नई सदी को पढ़ो कबीरा' मेरे लिए।

कबीरा उसी 'ढाई आखर', परस्पर प्रेम सद्भावना-समरसता को ज़िंदा रखने की बात करते हैं जो हमें राम और कृष्ण दे गए हैं, जो बुद्ध दे गए हैं। बाँटने नहीं 'साटने' का मंत्र है कबीरा, समाज को, सच्चाई को, अच्छाई को जोड़ने का उसके साथ हो लेने का उसको जी लेने का नाम है कबीरा, साथ ही कबीरा का मतलब है, आडंबरों पर खुला प्रहार, विद्रूपताओं-विडंबनाओं को सीधी चुनौती, झूठ के ख़िलाफ़ मुखर होने की अपार शक्ति है कबीरा, वस्तुतः हमारे माण्डूक्योपनिषद के 'सत्यमेव जयते' के सशरीर स्वरूप का नाम है कबीरा।

मेरा ऐसा मानना है कि एक क़लमकार की प्रतिबद्धता और प्राथमिकता मानवीयता और निष्पक्षता होनी चाहिए। सत्य के पक्ष में और सत्य के साथ खड़े होने की अशेष इच्छाशक्ति और अटूट हिम्मत में ही लेखनी की सार्थकता है। व्यक्ति-व्यवस्था या संस्थान किसी भी युग में रहे हों या आगे भी, खूबियों और ख़ामियों के साथ ही होंगे, लिहाजा खूबियों को समृद्ध करना और ख़ामियों को दुरुस्त करना या उसके लिए प्रयास करना यह हर व्यक्ति का कर्तव्य है ना कि सिर्फ किसी लेखक का। हर व्यवस्था एवं संयोजन में गुण-दोष होते हैं इसीलिए समेकित रूप से उसको सही और बेहतर करने की ज़िम्मेदारी सबकी होती है और यह सकारात्मक भाव से ही हो सकता है अंधी या फ़िज़ूल आलोचना से नहीं। सभी को अपने समय को और आने वाले वक्त को और अच्छा करना चाहिए और इस कार्य को ज़िम्मेदारी और जवाबदेही के साथ लेना चाहिए।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ सुविख्यात साहित्यकार ममता कालिया जी का, जिन्होंने इस पुस्तक हेतु अपनी अभिव्यक्ति दी। हमारे लिखे पर आपका 'कहा' सचमुच इसे अशेष और विशेष दोनों कर देता है।

बहुत आभारी हूँ सुप्रसिद्ध कवि पद्मश्री प्रोफेसर अशोक चक्रधर जी का जिन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखी और सचमुच बहुत मन से लिखी, मेरा अशेष प्रणाम।

अति विशेष आभार सुविख्यात वरिष्ठ कवि डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र जी का जिनके स्नेह-शब्द मेरी इस पुस्तक हेतु आशीर्वाद के रूप में मुझे मिले, अनंत आभार आदरणीय बुद्धिनाथ चाचा जी का।

सुप्रसिद्ध नवगीतकार आदरणीय-अग्रज यश मालवीय जी का अनंत-अशेष आभार कि उन्होंने मेरी इस पुस्तक हेतु बहुत ही विस्तार से अपने विचारों को प्रकट किया, मेरी रचनात्मकता पर अपनी विशेष टिप्पणियाँ की और बहुत ही भरे पूरे मन से इस संग्रह की समग्र रचनात्मकता पर अपनी बात रखी।

स्मृति शेष पद्मभूषण गोपालदास नीरज जी आज फिर याद आ रहे हैं क्योंकि इनमें से कुछ रचनाएँ उन्होंने भी सुनी थीं, मंचों के माध्यम से या व्यक्तिगत बैठकी-मुलाकातों में। अफ़सोस इसलिए भी हो रहा है कि मेरी लगभग हर पुस्तक में नीरज जी की भूमिका होती थी, बहरहाल इस पुस्तक पर उनकी भूमिका ना सही मेरे एक रचनाकार होने में ज़रूर उनकी भूमिका थी, है और रहेगी।

इस पुस्तक की कई कविताएं समाचार पत्रों या साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं और प्रयास यही है कि जिंदगी और अनुभूतियों के तमाम रंग-बिरंगे, मटमैले, उजले-काले, खुर्दुरे-चिकने, नुकीले, तमाम पक्ष और आयाम आप तक पहुँचा सकूँ, आपसे साझा कर सकूँ। मेरी पिछली पुस्तकों की तरह इस पुस्तक को भी आपका अपार स्नेह मिले आशीर्वाद मिले यही कामना है, साथ ही किसी भी तरह के सुझाव एवं स्वस्थ आलोचना और मार्गदर्शन का भी सदैव स्वागत रहेगा।

स्मृति शेष पिताश्री जनकवि कैलाश गौतम जी की अशेष स्मृतियों को प्रणाम करते हुए पुनः साहित्यकार-संपादक स्मृति शेष रवींद्र कालिया जी याद आ रहे हैं जिन्होंने सबसे पहले अपने संपादन में 'गंगा यमुना' में मेरी रचनाओं को छापा था। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० दूधनाथ सिंह जी को विशेष प्रणाम जिनका आशीर्वाद अक्सर मिला करता था, लिखने-पढ़ने को लेकर और विशेषतः इस



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक के लेखन और कैलाश गौतम समग्र के संपादन के समय, जो मेरी रचना यात्रा में बहुत सहायक सिद्ध हुआ।

धर्मपत्नी प्रमिला राय एवं पुत्री यशस्वी (इग्लू) ने कविताओं को संजोने और सुरक्षित रखने में महती भूमिका निभाई तथा अम्मा ने कई कविताओं को सुना-सराहा और कुछ सुझाव भी दिए। प्रकाशन हेतु विशेष रूप से इंक पब्लिकेशन एवं प्रिय मित्र दिनेश कुशवाहा जी का विशेष आभार।

जय हिन्द।।

– डॉ० श्लेष गौतम



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अनुक्रमणिका

1. नई सदी को पढ़ो कबीरा 21
2. ढाई आखर की बुनियादें 23
3. हिंदी 24
4. गधे ही गधे हैं 26
5. चाँद 28
6. लिखो-लिखो 29
7. यह कैसी बोली है 30
8. सत्ता के गलियारे फिर रीमिक्स सुनायेंगे 31
9. दिया जलाकर धर दो 32
10. सूर्य 33
11. यह तिलस्म है ये जादू है 34
12. राम 36
13. सिलसिला यादों का 38
14. तब कविता कह पाये हैं 39
15. ख़त 40
16. भारत छोड़ो 42
17. तिरंगा 44
18. ख़ून शहीदों का 47
19. आतंकी मंसूबों पर अब खुलकर वार ज़रूरी है 49
20. साँप-नेवला 51
21. संघर्षों का अटल सिपाही 52
22. नन्हें फूल 54
23. शुभ मंगल सी शगुन सी आँखें 56
24. खाकी 57
25. शब्द-शब्द सावन अक्षर-अक्षर बरसातें होंगी 59
26. राखी 60



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

27. भारत की मुस्कान तुम्हीं हो 61
28. जेठ में नैनीताल 63
29. मत समझाओ बाबा 65
30. ये आँसू है इन्हें आँखों से बह जाने दो अच्छा है 66
31. बोलो राम 67
32. भीष्म 68
33. बेटा ठीक नहीं 70
34. हिंदुस्तान 72
35. शैया गीतों वाली 75
36. इंटरनेट 76
37. बादल 77
38. गौरी भी है सीता भी है दुर्गा चंडी काली है 78
39. झाँसी वाली रानी 79
40. कैसे हो पहचान 80
41. कलाम सी संतान 81
42. सोचा तुम पर गीत लिखूँ 82
43. यादें 83
44. कैसी-कैसी साज़िश 84
45. मौके पर गोल रहे हैं 85
46. भोले हैं 86
47. भीतर से मरे हुए हैं 87
48. जीना मुश्किल है 88
49. गाँव 89
50. बस घड़ी दो घड़ी का मिलन 90
51. बाबा नानक 92
52. ज़िन्दगी तेरे गले लगने का मौसम आ गया 94



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

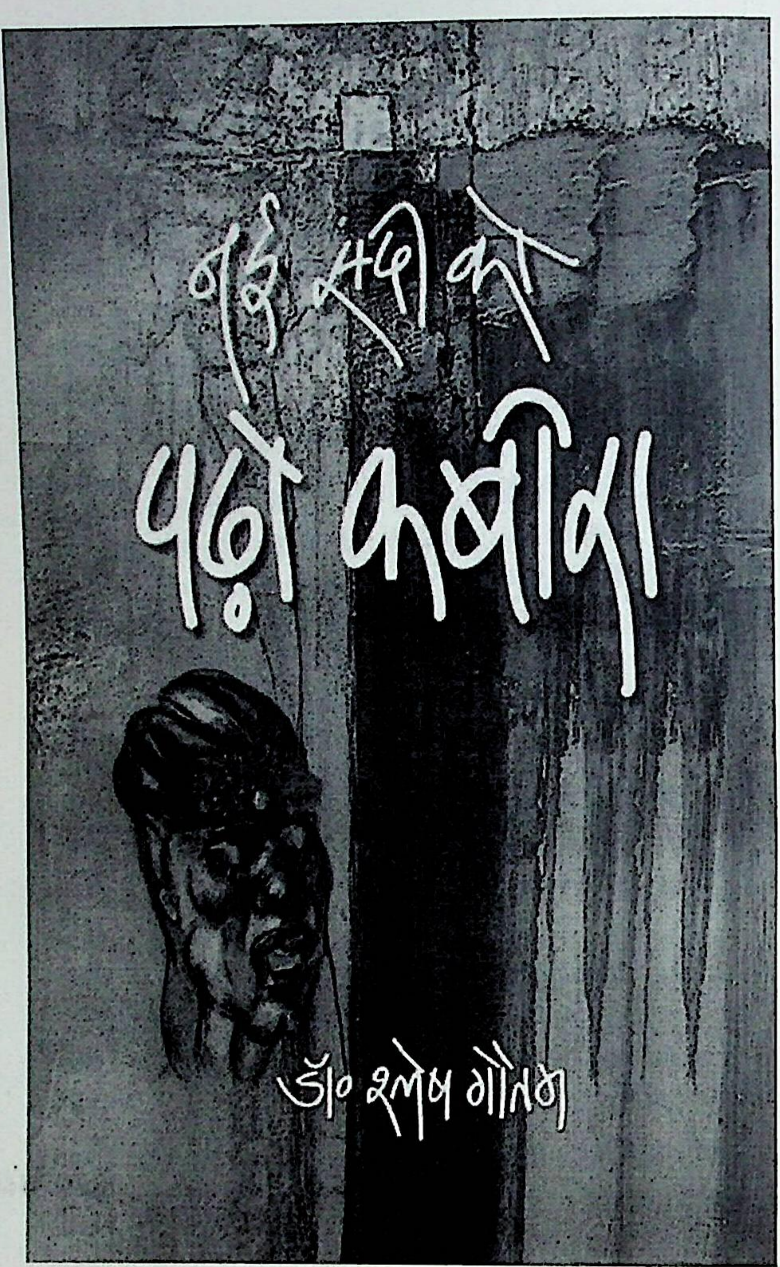




RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# नई सदी को पढ़ो कबीरा

उठो कबीरा बढ़ो कबीरा
नई सदी को पढ़ो कबीरा
शब्दों को हथियार बनाकर
फिर दुनिया से लड़ो कबीरा

जात को तोड़ो पात को तोड़ो
तोड़ने वाली बात को तोड़ो
बिगड़ रहे हालात को तोड़ो
पागल हुई ज़मात को तोड़ो
दिन को तोड़ो रात को तोड़ो
घात और प्रतिघात को तोड़ो
अकड़ भरी औकात को तोड़ो
झूठ की हर बारात को तोड़ो
पेट पे पड़ती लात को तोड़ो
सच्चाई की मात को तोड़ो

गीत ग़ज़ल कविताई वाला
थप्पड़ मुँह पर जड़ो कबीरा

आग लगाती आग बुझा दो
नए प्रेम की आग लगा दो
ज़हर उगाते बाग हटा दो
फूल नए रंगों के खिला दो
दूर करे जो सुर वो भुला दो
एक करे जो राग कढ़ा दो
प्रेम पगी साखियाँ सुना दो
फिर सोतों के भाग जगा दो
बांट रही दीवार गिरा दो
नई-नई तस्वीर बना दो



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौकन्ने दिन-रात रहो तुम
तोड़ने वाले तड़ो कबीरा

ढाई आखर गाना होगा
साखी सबद सुनाना होगा
तुमको फिर से आना होगा
फिर सबको समझाना होगा
गुस्सा खूब चबाना होगा
खुद को भी बहलाना होगा
देख-देख शरमाना होगा
कई बार पछताना होगा
घर-घर आना-जाना होगा
सबका साथ निभाना होगा

सच्चाई का चाबुक लेकर
झूठ की छाती चढ़ो कबीरा

दिशा बदल दो दशा बदल दो
मार-काट का नशा बदल दो
चुभती है जो हवा बदल दो
मर्ज़ पकड़ लो दवा बदल दो
ख़ानपान घर पता बदल दो
चूल्हा-चक्की तवा बदल दो
ताल बदल दो कुआँ बदल दो
ये सियार, हुआँ-हुआँ बदल दो
हाथ बदल दो दुआ बदल दो
अब तक जो भी हुआ बदल दो

नई-नई माटी से फिर से
इस दुनिया को गढ़ो कबीरा
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# ढाई आखर की बुनियादें

पढ़े-लिखों की चालाकी से फूट गई तक़दीर
ढाई आखर की बुनियादें हिलने लगीं कबीर

मिल-जुलकर कैसे रहना है दुनिया भूल गई है
तुमने देखा नहीं मदरसा ये स्कूल गई है

ख़ून की होली तोड़ रही है रिश्तों की ज़ंज़ीर

तुम परवाह कहाँ करते थे कितना बोल गए थे
दाढ़ी चोटी जंतर-मंतर सबकुछ खोल गए थे

अक्षर-अक्षर सत्य तुम्हारा मिलती नहीं नज़ीर

कड़वाहट फूलों में फैली हवा हुई ज़हरीली
सुबह-शाम खा-खा अफ़ीम ये पीढ़ी हुई नशीली

रंगों से रंगत गायब है चुभने लगा अबीर

घुटने टेक रहे हैं वंशज चाटुकार हैं छिछले हैं
शब्दाडंबर ओढ़ पहनकर क़लम बेचने निकले हैं

रोम-रोम है गिरवी इनका मुर्दा हुआ ज़मीर

झूठ को सच कहती है दुनिया सच को झूठ बताती
पाप की गठरी सिर पर लादे गंगा रोज़ नहाती

साफ़ हुआ मन कभी नहीं बस धुलता रहा शरीर

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# हिंदी

भाषा की भाव-भूमि है संवाद है हिंदी
अंतःकरण की चेतना है नाद है हिंदी
शब्दों का संस्कारों में अनुवाद है हिंदी
बच्चन निराला पंत है प्रसाद है हिंदी

पानी है कभी और कभी आग है हिंदी
वैभव है कभी तो कभी बैराग है हिंदी
बिल्कुल सरल न कोई गुणा-भाग है हिंदी
सातों सुरों का रंग सदा राग है हिंदी

आपस का प्रेम एकता की बात है हिंदी
जाड़े की धूप गर्मियों की रात है हिंदी
भाषाई मेल-जोल मुलाक़ात है हिंदी
उर्दू में जगे भाव तो जज़्बात है हिंदी

अक्षर में बसी आत्मा है प्राण है हिंदी
तुलसी कबीरा सूर है रसख़ान है हिंदी
मीरा सुभद्रा महीयसी का गान है हिंदी
भारत की अमर वाणी है पहचान है हिंदी

भावों में प्रबल भावना सद्भाव है हिंदी
माला है बोलियों की है जुड़ाव है हिंदी
बहती नदी की धार सहज नाव है हिंदी
शहरों में फली-फूली मगर गाँव है हिंदी



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वाधीनता का पृष्ठ है इतिहास है हिंदी
गाँधी की सतत् आस्था विश्वास है हिंदी
कान्हा की बाँसुरी है महारास है हिंदी
सीता को जैसे राम की ही आस है हिंदी

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# गधे ही गधे हैं

कहो मत कि उनके सनम ही गधे हैं
हमारे तुम्हारे बलम भी गधे हैं
यहीं इस जगह ही नहीं बस गधे हैं
कहीं जाइए बस गधे ही गधे हैं

कहीं पर हैं छुट्टे कहीं पर बंधे हैं
कोई इसके खूँटे कोई उस बंधे हैं
कई गोल में कुछ अकेले खड़े हैं
कहीं पर गधे घोड़ों संग चल पड़े हैं

मज़बूत भी मेहनती भी गधे हैं
वफ़ादार हैं ज़िन्दगी भी गधे हैं
है थोड़े से चारे पे इनका गुजारा
मगर मालिकों की ये रोटी गधे हैं

मूरख हैं कुछ, कुछ सयाने गधे हैं
हैं पागल तो कुछ, कुछ दीवाने गधे हैं
मुहब्बत में डूबे तराने गधे हैं
फलाने किसिम के फलाने गधे हैं

हैं कमज़ोर कुछ, कुछ तो कच्चे गधे हैं
हैं झूठे तो कुछ सीधे-सच्चे गधे हैं
गधों में भी अच्छे और टुच्चे गधे हैं
बहुत से सधे और पक्के गधे हैं



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं ख़ामोश कुछ, कुछ बहुत रेंकते हैं
हैं आज़ाद कुछ घुटने कुछ टेकते हैं
हैं मायूस कुछ, कुछ तो मुस्का रहे हैं
सधे राग में कुछ गधे गा रहे हैं

गली में गधे महफ़िलों में गधे हैं
मुहब्बत बढ़ी अब दिलों में गधे हैं
हैं टीवी में अख़बारों में अब गधे हैं
सभाओं में हुंकारों में अब गधे हैं

बहस में गधे आजकल आ गए हैं
ज़मीं आस्मां हर जगह छा गए हैं
सियासी दलों को गधे भा गए हैं
बहुत कुछ गधे आजकल पा गए हैं

कहीं आ रहे हैं कहीं जा रहे हैं
जहाँ ठौर उसकी बजा गा रहे हैं
जगा है मुक्कदर तो इतरा रहे हैं
मजे से गधे आज चर-खा रहे हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# चाँद

हमें पता था चाँद मेरे तू नखरे ज़रा दिखायेगा
इतनी जल्दी इतनी आसानी से हाथ ना आएगा

याद मगर रख इस भारत को कोई रोक ना पायेगा
चाँद तेरी धरती पे तिरंगा भारत का लहरायेगा

सच तो यही है चाँद मेरे हम तुझको छूने आये थे
गले लगाकर बाहों में भर प्यार जताने आये थे

अभी बहुत आगे जाना है हार-जीत बेमानी है
चाँद मेरे सुन पार चाँद के जाने की अब ठानी है

आँसू नहीं तपस्या वाले मोती बाहर आये हैं
ऊँचे-ऊँचे नये ख़्वाब के बादल फिर लहराये हैं

हम ज्ञानी हैं विज्ञानी हैं कभी हार ना मानेंगे
इस धरती से उस अंबर तक सोच के तंबू तानेंगे

ये भारत है सदा चुनौती नई-नई ये लेता है
जटिल प्रश्न हो चाहे जितने उत्तर जग को देता है

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## लिखो-लिखो

लिखो-लिखो तुम लिखो-लिखो
अब नई कहानी लिखो
हृदय हुआ पत्थर आँखों से
ग़ायब पानी लिखो

हाल नहीं पूछेगा कोई
साथ नहीं अब देगा
चीख-चीखकर मर जाओगे
हाथ नहीं अब देगा

कैसे कह दूँ ढाई आखर
कबिरा बानी लिखो

दौलत शोहरत अगड़म-बगड़म
क्या-क्या पास नहीं है
दिल-दिमाग़ है स्वस्थ मगर
कोई एहसास नहीं है

है मिठास ग़ायब रिश्तों से
ज़हरखुरानी लिखो

कोई सुनता नहीं आज
ना कोई बोल रहा है
मुर्दा एहसासों की कलई
वक्त ये खोल रहा है

सोये हुए ज़मीर की खुलकर
कारस्तानी लिखो
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## यह कैसी बोली है

हँसी उड़ाती पंचायत की
यह कैसी बोली है
तार-तार मर्यादा
सीने पर जैसे गोली है

भूल गए हम सदाचार
आचरण सभ्यता भूल गए
कहने को बस पढ़ीं किताबें
कहने को स्कूल गए

नई-नई पोथी गाली की
फिर हमने खोली है

सोच समझकर बोलो भाई
कबीरा बोल गए हैं
संयम की बोली-बानी की
महिमा तोल गए हैं

नीयत ठीक नहीं भाई
बेशक सूरत भोली है

मान करो सम्मान करो तुम
बड़े हो इसका ध्यान रहे
नई पौध तुम्हें देख रही है
तुम भी इसको जान रहे

यह भारत का मंदिर
सपनों की अपने डोली है
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सत्ता के गलियारे फिर रीमिक्स सुनायेंगे

नई धुनों पर गीत पुराने गाये जायेंगे
सत्ता के गलियारे फिर रीमिक्स सुनायेंगे

खेल पुराना ही होगा पर नये तरीके से
दाँव-पेंच छल-छंद भी होगा बड़े सलीके से

क़लम किसी की होगी स्याही और किसी की होगी
लोक हार जाएगा फिर से जीत तंत्र की होगी

ज़हर बुझी इच्छायें खुद को नेक बतायेंगी
लालच में डूबी लिप्सायें एक हो जायेंगी

ख़्वाब सुनहरे मीठी नींदों वाली बातें होंगी
ठंडे दिन सूरज सी चमकती सारी रातें होंगी

रंग-बिरंगा मेकअप होगा नये मुखौटे लायेंगे
बहुरूपिये नई-नई आवाज़ों में चिल्लायेंगे

होश न खोना जोश न खोना ध्यान लगाकर सुन लेना
तोड़ रहा जो छोड़ उसे तुम जोड़ने वाला चुन लेना

नई रोशनी उम्मीदों के पंख लगाकर आयी है
जन के सत्ता की बदली फिर घटा-घनेरी छायी है

आओ एक शपथ हम खायें नया सवेरा लायेंगे
भारत की बगिया को प्रेम की खुशबू से महकायेंगे

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# दिया जलाकर धर दो

अंधकार से लड़ो आलोकित पथ-प्रकाश से कर दो
भीतर के अंधियारे पर भी दिया जलाकर धर दो

नई ऊर्जा नई रोशनी सबकुछ जगमग होगा
पूरा-पूरा नहीं तो फिर भी लगभग-लगभग होगा

उल्लासित जीवन हो सबका खुशियों के रंग भर दो

ऊँच-नीच का भेद ना पनपे क्या तेरा क्या मेरा
मन का मैल मिटे भीतर से नेह का हो बस डेरा

खुली खिड़कियाँ दरवाज़े हों दाता ऐसा घर दो

दिया बने हम तेल बने हम बने सदा हम बाती
प्रेम-दीप की जलती लौ के सदा बने हम साथी

हो प्रकाश का वास शाश्वत हे प्रभु ऐसा वर दो

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सूर्य

दिव्य प्रखर जब तेज़ सूर्य का
नई रोशनी लाता है
अंधियारों का घोर उपासक
भीतर तक डर जाता है

ईर्ष्या में डूबी कुंठाएँ
फन फैलाने लगती हैं
आरोपों के षडयंत्रों के
ढोल बजाने लगती हैं

कहाँ सूर्य होता है विचलित
ऐसी गीदड़ भभकी से
बिना रीढ़ के अंधियारों की
ऐसी-वैसी धमकी से

प्रबल-प्रतापी सूर्य सदा
यूँ ही मुस्काता रहता है
सृष्टि के कण-कण में फैले
अंधियारे को हरता है

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# यह तिलस्म है ये जादू है

देख रही है पूछ रही है या कुछ बोल रही है
ये तिलस्म है ये जादू है कुछ ना खोल रही है

सागर सी गहरी लगती है और लहरों सी चंचल
ख़ामोशी के दामन में इक छुपी हुई सी हलचल

कभी निमंत्रण सी लगती है कभी लगे संबोधन
कभी ये खुद से बातें करती कभी लगे उद्‌बोधन

कभी दुआओं सी लगती है कभी लगे सम्मोहन
कभी ये मीराबाई लगती कभी लगे ये मोहन

कभी घटाओं सी लगती है कभी लगे ये बादल
कभी ये सुध-बुध खोती लगती कभी लगे ये पागल

कभी धूप सी ये लगती है कभी छाँव लगती है
कंक्रीट के शहर में जैसे एक गाँव लगती है

मंत्र कभी लगती हैं आँखें गीत कभी लगती हैं
मन-मंदिर में गूँज रहा संगीत कभी लगती हैं

रास-रंग लगती हैं आँखें उत्सव सी लगती हैं
उल्लासों की किसी नदी का उद्‌भव सी लगती हैं

आती-जाती गहरी-गहरी साँसों सी लगती हैं
डूब रहे को जैसे थामती बाँहों सी लगती हैं


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर कभी लगती हैं आँखें पास कभी लगती हैं
बिन बोले बिन छुए कोई एहसास कभी लगती हैं

दर्द कभी लगती हैं आँखें दवा कभी लगती हैं
मद्धम-मद्धम शीतल-शीतल हवा कभी लगती हैं

डोर कभी लगती हैं आँखें पतंग कभी लगती हैं
होली के उल्लास में डूबी रंग कभी लगती हैं

प्रेम ऋचाओं सी लगती हैं भजन कभी लगती हैं
खुद से रूठी हुई कभी तो कभी मगन लगती हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## राम

हृदय में तुम हो ईश तुम्हीं हो
सत्य तुम्हीं तुम पावन हो
राम तुम्हारी सदा ही जय हो
तुम सूखे में सावन हो

अत्याचारी-अहंकारी था रावण
जान रहा हूँ मैं
छलिया था वो दोषी था वो
सबकुछ मान रहा हूँ मैं

सागर लाँघा युद्ध किया और पाप का
अंत किया तुमने
रावण की करनी का प्रभुवर फल भी
सही दिया तुमने

आज मगर लाखों रावण हैं
जिन्हें देख मैं डरता हूँ
इसीलिए हे प्रभुवर आज मैं
प्रश्न आपसे करता हूँ

त्रेतायुग के उस रावण का
सेना ले संहार किया
आज मगर लाखों रावण हैं
क्यूँ ना उन पर वार किया

मासूमों की इज़्ज़त लूट रहे जो
उन पर वार करो



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एसिड फेंक के भाग रहे जो
अब उनका संहार करो

देश को धोखा देने वालों को
प्रभुवर तुम खत्म करो
काले धन के सरदारों को
हे प्रभुवर तुम भस्म करो

जो बच्चों की चोरी करते
भीख मंगाते नाश करो
अंग बेचते जो मानव के
उनका सत्यानाश करो

मात-पिता को जो हैं सताते
उनको सबक सिखाओ तुम
घर के हर भूले-भटके को
प्रभुवर राह दिखाओ तुम

आज के युग के रावण ज्यादा
बर्बर अत्याचारी हैं
उन असुरों की क्या बिसात
ये हैवानों पर भारी हैं

इसीलिए हे राम तुम्हारा
आना बहुत ज़रूरी है
इन दुष्टों का अब तो मारा
जाना बहुत ज़रूरी है

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सिलसिला यादों का

इक सिलसिला यादों का है जो टूटता नहीं
छाले सा हो गया है मगर फूटता नहीं

ख़त तेरे सारे तोहफे हमने जला दिए
रस्ते, गली हर मोड़ तेरे सब भुला दिए

सूखी हुई हम घास तेरी याद आग है
सौ आँधियों के बीच में जलता चिराग है

मौसम हमारे दिल से सदा खेलते रहे
बारिश में काग़ज़ों की तरह भीगते रहे

लहरों के थे तूफ़ाँ के थे हम रोज़ निवाले
टूटी हुई कश्ती थी समुंदर के हवाले

रस्तों का ना पता था न मंज़िल की थी तलाश
बस साँस ले रही थी जैसे एक ज़िन्दा लाश

अब भी हवाएँ रोज़ पता पूछती तो हैं
आँखों में मेरे रोज़ तुझे ढूँढती तो हैं

कैसे कहूँ इन आँखों में वो नूर नहीं है
कैसे हो चमक अब वो कोहिनूर नहीं है

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# तब कविता कह पाये हैं

आँखें बादल बन-बन बरसीं तब कविता कह पाये हैं
एक खुशी को बरसों तरसीं तब कविता कह पाये हैं

काँटों वाले सेज पे सोये तब कविता कह पाये हैं
रातों को उठ-उठकर रोये तब कविता कह पाये हैं

दर्द के सागर पीकर आये तब कविता कह पाये हैं
चोट पे चोट बराबर खाये तब कविता कह पाये हैं

अपमानों का घूँट पिया जब तब कविता कह पाये हैं
खुद हाथों से जख्म सिया जब तब कविता कह पाये हैं

कई रात जब नींद ना आई तब कविता कह पाये हैं
महफ़िल ने जब दी तन्हाई तब कविता कह पाये हैं

अपनों से जब पाये धोखे तब कविता कह पाये हैं
सूज गई आँखें रो-रो के तब कविता कह पाये हैं

ज़हर पिया हँस-हँसकर हमने तब कविता कह पाये हैं
बदल गई दुनिया सब अपने तब कविता कह पाये हैं

ख़ून पसीने की स्याही है तब कविता कह पाये हैं
पीर हुई जब वाहवाही है तब कविता कह पाये हैं

शब्द हुए जब संस्कार हम तब कविता कह पाये हैं
अक्षर-अक्षर हुआ प्यार हम तब कविता कह पाये हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## ख़त

लफ़्ज़ों को गले लगाते थे
सीने पर रखकर सोते थे
हम तेरी सूनी आँखें ख़त में
पढ़-पढ़ घण्टों रोते थे

तब अक्षर-अक्षर दिल होता
बेचैन धड़कनें होती थीं
छुप-छुप के तेरा ख़त पढ़ते
आहट पे नज़रें होती थी

गुस्सा आँसू मुस्काने शिकवा
तुम खत में लिखती थी
बूँद-बूँद स्याही में लेकिन
तुम बस तुम ही दिखती थी

कई बार आँसू तेरे हमने ख़त
पर छलके देखे
बेचैन अजब सी रातों में हमने
उठ के चल के देखे

एहसास मुहब्बत दीवानापन
खत में रंग हज़ारों थे
अल्हड़ उमर थी पर ये ख़त ही
हुए धाम अब चारों थे



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ख़त में जिगर लहू होता था
ख़त में साँसें होती थीं
ख़त ही आलिंगन होता था
ख़त ही बाहें होती थीं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## भारत छोड़ो

दहशतगर्दी बलवाई दंगाई भारत छोड़ो
भूख गरीबी लाचारी मंहगाई भारत छोड़ो

बार में डूबी उतराई तरूणाई भारत छोड़ो
आँखों में पल-पल पलती बेहयाई भारत छोड़ो

नफ़रत की दीवार बढ़ाने वालों भारत छोड़ो
मौत का तुम व्यापार बढ़ाने वालों भारत छोड़ो

लहू-लहू त्योहार बनाने वालों भारत छोड़ो
झूठ को तुम हथियार बनाने वालों भारत छोड़ो

साजिश लालच से भरमाने वालों भारत छोड़ो
हमको सौ सौ नाच-नचाने वालों भारत छोड़ो

भ्रष्टाचार की रेल चलाने वालों भारत छोड़ो
बंदूकों से हमें डराने वालों भारत छोड़ो

हम गरीबों का दर्द बढ़ाने वालों भारत छोड़ो
भाई-भाई को रोज़ लड़ाने वालों भारत छोड़ो

अन्नदाता की खुशी चुराने वालों भारत छोड़ो
झूठ का हमको पाठ पढ़ाने वालों भारत छोड़ो

सूर कबीरा तुलसी भूलने वालों भारत छोड़ो
मोमिन ग़ालिब जायसी भूलने वालों भारत छोड़ो



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीरा–महादेवी को भूलने वालों भारत छोड़ो
मीर नज़ीर रसख़ान को भूलने वालों भारत छोड़ो

अशफ़ाक लियाकत अली को भूलने वालों भारत छोड़ो
भगत सिंह आज़ाद को भूलने वालों भारत छोड़ो

गाँधी सुभाष टैगोर को भूलने वालों भारत छोड़ो
लाल बाल और पाल को भूलने वालों भारत छोड़ो

सत्ता को जागीर बनाने वालों भारत छोड़ो
रेत को बहता नीर बताने वालों भारत छोड़ो

फलां–फलां का मोह जताने वालों भारत छोड़ो
कुर्सी खातिर देश डुबाने वालों भारत छोड़ो

❑❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# तिरंगा

आन-बान है शान तिरंगा
भारत का अभिमान तिरंगा

सदियों का बलिदान तिरंगा
जय वीरों का गान तिरंगा

जन-जन का सम्मान तिरंगा
आज़ादी का मान तिरंगा

आँख-नाक है कान तिरंगा
साँस-साँस है प्रान तिरंगा

राग रंग पहचान तिरंगा
हम सबकी है जान तिरंगा

शेखर का अभियान तिरंगा
बोस का गौरवगान तिरंगा

भगतसिंह का ध्यान तिरंगा
गाँधी का अवदान तिरंगा

तिलक का है यशगान तिरंगा
दुनिया को फ़रमान तिरंगा

सफल हुआ जो प्लान तिरंगा
है अमूल्य वरदान तिरंगा



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता और कुरान तिरंगा
अशफ़ाक उल्ला ख़ान तिरंगा

बीज-खेत-खलिहान तिरंगा
गेहूँ-गन्ना-धान तिरंगा

जय-जय बोल किसान तिरंगा
न्याय-पंच-परधान तिरंगा

रक्षक-वीर-जवान तिरंगा
कण-कण में भगवान तिरंगा

सूफ़ी-संत महान तिरंगा
तुलसी और रसख़ान तिरंगा

मधुशाला की तान तिरंगा
ग़ालिब का दीवान तिरंगा

राम-कृष्ण का ज्ञान तिरंगा
है दधीचि का दान तिरंगा

गुरूवाणी का पान तिरंगा
वेद-वेदांत पुरान तिरंगा

भाई-भाई इंसान तिरंगा
कबीरा का ऐलान तिरंगा



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरा-भरा गुलदान तिरंगा
प्रेम का है रसपान तिरंगा

होली और रमज़ान तिरंगा
सत्यनिष्ठा ईमान तिरंगा

क्रान्ति-कीर्ति का भान तिरंगा
मधुर-मधुर मुस्कान तिरंगा

अधिकारों की ख़ान तिरंगा
लोकतंत्र का यान तिरंगा

सफल जो तीर कमान तिरंगा
लक्ष्यभेदी है बान तिरंगा

कालजयी बलवान तिरंगा
कर दे जो ले ठान तिरंगा

लहराता अरमान तिरंगा
दुनिया का सुल्तान तिरंगा

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## ख़ून शहीदों का

ख़ून शहीदों का रह-रहकर चीख-चीखकर पूछ रहा
तुम्ही बताओ क्यों तुमको हल भला नहीं क्यों सूझ रहा

कहाँ गये वो एक के बदले दस सर वाले वादे
अभी बताओ वो जुमले थे या थे अटल इरादे

अड़तालिस से कारगिल तक चारों युद्ध बिचारो
बहुत हुई ये लुका-छिपी अब भीतर घुसकर मारो

कब तक निंदा केवल निंदा वाली बातें होंगी
इस भारत के हिस्से में ये काली रातें होंगी

सुनो शहीदों के घर से तुम आने वाली चीखें
बोलो कब दिन लौटेंगे कब बदलेंगी तारीखें

कभी उरी तो पुंछ कभी तो कभी त्राल ही होगा
हर हमले पर चुप जो बैठे बुरा हाल ही होगा

कौन सी आख़िर मज़बूरी है कौन भला दुश्वारी
और नहीं अब सह पाएगा भारत बोझ ये भारी

हमलों पर ये कैसी चुप्पी कार्यवाई क्यों गुम है
सुधरेगा ये नहीं कभी ये तो कुत्ते की दुम है

करो फ़ैसला कुछ ऐसा अब आर-पार हो जाए
पेशावर लाहौर कराची तार-तार हो जाए



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदा अहिंसा का पालन सिद्धांत नहीं मज़बूरी है
वार की भाषा जो समझे संग उसके वार ज़रूरी है

एक नहीं दो चार नहीं ये ये सौ-सौ धोखे देंगे
बहुत हुआ अब चक्र चला हम कितने मौके देंगे

कब तक लहू बहेगा यूँ ही कब तक हम रोयेंगे
कब बोलो हम पटक-पटककर दुश्मन को धोयेंगे

बहुत हुई ये बातचीत ये लल्लो-चप्पो बहुत हुई
शाल मिठाई राजनीति की हीही-होहो बहुत हुई

देश दुखी है दर्द बहुत है ख़ून है उतरा आँखों में
आतंकी मंसूबों को तब्दील करो अब राखों में

एक फैसला हो जाए इस बार-बार से मुक्ति हो
ध्वस्त करो आतंकवाद इस कारोबार से मुक्ति हो

एक नहीं पूरे भारत ने ही मिलकर ये ठानी है
आतंकी मंसूबों को अब याद दिलानी नानी है

जब तक धरती है अपनी ये हिन्दुस्तान रहेगा
रहेगा ऊँचा मस्तक अपना क़ायम मान रहेगा

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# आतंकी मंसूबों पर अब खुलकर वार ज़रूरी है

नफ़रत की आतंक की सीमाओं को हमने तोड़ दिया
देख तेरे घर में घुसकर सिर पर तेरे बम फोड़ दिया

भारत के दुश्मन ये सुन लें अब तैयारी पूरी है
संयम की शक्ति को कोई ना समझे मज़बूरी है

प्यार मुहब्बत को जो समझे उससे प्यार ज़रूरी है
आतंकी मंसूबों पर अब खुलकर वार ज़रूरी है

कब तक आख़िर भारत सहता गोली बम बारूदों को
पाकिस्तानी हाफ़िज़-अज़हर'दाऊद के उन्मादों को

कब तक आख़िर ख़ून बहाते अपने वीर जवानों का
बरसों से छटपटा रहे भीतर-भीतर अरमानों का

पाक हो पर नापाक हरकतों की तुमने अगुवाई की
जेहादी आतंक की तुमने भारत में सप्लाई की

कश्मीर पंजाब मुंबई कैसे-कैसे खेल किये
लहूपान कर मासूमों का मानवता को फेल किये

सूनी माँगें सूनी आँखें अब भी रह-रह चीख रही
अपनों के बिन कैसे जीते दर्द में जीना सीख रहीं

तुमने केवल तुमने कितनी माँ की कोखें सूनी की
मीठी-मीठी बातें बोलीं हरकत लेकिन ख़ूनी की



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी दुनिया जान गई अब भारत चुप ना बैठेगा
रीढ़ की हड्डी टूटेगी उसकी जो यूँ ही ऐंठेगा

सारी सेना भारतवासियों का यारों सुर एक हुआ
कई बरस से जो अटका था आज काम वो नेक हुआ

❑❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साँप–नेवला

यह कहना मुश्किल है किसने किसपे डोरे डाले थे
साँप मगन था खुश था नेवला दोनों ही मतवाले थे

एक समंदर की लहरों सा, दूजे में थी आग बड़ी
अपनी–अपनी मज़बूरी थी, छींके पर थी आँख गड़ी

भूख तेज़ थी और मलाई वाले सजे निवाले थे

हार–जीत की बात कहाँ है, प्यार कहाँ तकरार कहाँ
मज़बूरी की नाव बताओ होती सागर पार कहाँ

घात लगाने के मंसूबे दोनों ने ही पाले थे

भला कौन है कौन बुरा है सारी दुनिया जान रही
झूठ–मूठ के नाटक को लल्ला दुनिया पहचान रही

आज मुखर होंगे सन्नाटे जिनके मुँह पर ताले थे

❑❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# संघर्षों का अटल सिपाही

संघर्षों का अटल सिपाही राह दिखाकर चला गया
हो अखंड भारत सदैव ये चाह दिखाकर चला गया

लोकतंत्र का सच्चा प्रहरी भारत का जन नायक था
शब्दकोश कम पड़ जाएँगे कहना कितना लायक था

स्वच्छ साफ़-सुथरी जननीति राजनीति को साधा था
प्रेमपाश में जिसने अपने सदा विरोधी बाँधा था

राष्ट्रप्रेम जिसकी बोली थी जनसेवा ही धर्म रहा
देश है पहले पक्ष-विपक्ष से चिंतन का ये मर्म रहा

सदन सभा हो या संबोधन या कोई भी बात हुई
कहीं नहीं कटुता आई हर बात मैत्री साथ हुई

राजधर्म का सच्चा पालन सच्ची वही कसौटी थी
लिया नहीं कुछ भी छल-बल से कैसी भले चुनौती थी

यू०एन० में भी जाकर जिसने मान बढ़ाया भारत का
हिन्दी का परचम लहरा सम्मान बढ़ाया भारत का

शब्दों का वो महारथी वो था किसान कविता वाला
सहृदय वो अजातशत्रु था वो साहित्य का मतवाला

हरदम क़दम बढ़ाया उसने पाक से भी जा गले मिला
बस चलवाई लाहौरी बदले में कारगिल हमें मिला



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हार न मानी रार न ठानी सबक दिया उत्पाती को
परमाणु से लैस किया हमें आँख दिखाई घाती को

सत्य यही है कमी न कोई पूरी कर सकता है
राजनेता मर सकता लेकिन कवि न मर सकता है

देह का अंत हुआ है केवल आप रहोगे कण-कण में
सूरज-चाँद सी कीर्ति तुम्हारी सदा रहोगे जन-गण में

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## नन्हें फूल

फूलों की सत्ता में नन्हें फूल कई दम तोड़ गए
माली तेरी भूल से गुलशन के हिस्से ग़म छोड़ गए

उखड़ गई बच्चों की साँसें सत्ता पर मदहोश रही
चीख-चीखकर रोई आँखें खादी पर बेहोश रही

कैसे गायें वंदे मातरम् कैसे गायें आज़ादी
जिनके हाथों डोर थी कल की उनकी ऐसी बर्बादी

अभी तो उन नन्हीं आँखों में ख़्वाब सुनहरे सजने थे
अभी तो उन नन्हीं जानों के गीत बधाई बजने थे

अभी तो उन नन्हीं जानों पर प्यार लुटाया जाना था
अभी तो उनके भोलेपन का लुत्फ़ उठाया जाना था

अभी तो उनको बचपन वाला गीत सुनाया जाना था
अभी तो नटखट मासूमों को गले लगाया जाना था

बड़े-बड़े ये फ्लाई ओवर मॉल बड़े तुम बनवाओ
आठ लेन के एक्सप्रेस खींचो मेट्रो बेशक चलवाओ

लाख करोड़ों के खर्चे दौरे मीटिंग के नाम गए
अफ़सर बाबू नेता जब भी सुबह गए या शाम गए

हम विकास के परिवर्तन के सदा समर्थन वाले हैं
अच्छी नीयत-नीति हो जिनकी उनके हम रखवाले हैं



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मान रहा हूँ सत्ता शासन की सौ-सौ मज़बूरी है
जान-माल जीवन की रक्षा सबसे मगर ज़रूरी है

अफ़सर मंत्री कब जागेंगे कब होगा उद्धार भला
उखड़ी साँसें पूछ रहीं बेड़ा हो कैसे पार भला

ज़िम्मेदारी लेनी होगी तलब करो बर्खास्त करो
जेल के भीतर भेजो क़ातिलों को मत कोई बात करो

ये मुआवज़े के मरहम से ज़ख़्म नहीं भरने वाला
चोट जिगर के टुकड़े की ये चाक जिगर को कर डाला

दर्द को अब महसूस करो ये भूल न बारम्बार करो
मक्कारों बेईमानों पर अब खुलकर तगड़ा वार करो

मासूमों से जीने की आज़ादी जो छिन जाएगी
कैसे देश बचेगा खुशहाली फिर कैसे आएगी

इनकी उखड़ी साँसों को इंसाफ़ दिलाना ही होगा
सच्ची आज़ादी का हमको अलख जगाना ही होगा

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# शुभ मंगल सी शगुन सी आँखें

शुभ मंगल सी शगुन सी आँखें
लगती हैं त्योहारों सी
सागर जैसी गहरी भी हैं
क़ातिल हैं मझधारों सी

दर्द बहुत है टीस बहुत है
प्यार भरी इन आँखों में
जाने कितने फूल छिपे हैं
इन पत्ते इन शाख़ों में

देख रही है घूम-घूमकर
दुनिया ये बंजारों सी

सुबह-सुबह सूरज हो जाती
रात ढले चंदा सी
गालों पर मोती लुढ़के जो
लगती ठेस ज़रा सी

खिली-खुली पर कभी-कभी
ये हो जाती दीवारों सी

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## खाकी

आन बान है शान हमारी ये खाकी
हम सबकी है जान हमारी ये खाकी
मान जान सम्मान हमारी ये खाकी
जिस पर दिल कुर्बान हमारी ये खाकी

खाकी केवल रंग नहीं है
ना है केवल कपड़ा
ना है केवल वर्दी खाकी
जिसने हमको जकड़ा

खाकी एक कसम है यारों
खाकी एक इरादा
खाकी देश की लाज है यारों
खाकी है मर्यादा

खाकी उतनी पावन जितनी
पावन मैया गंगा
खाकी मतलब वीर सिपाही
हाथों लिए तिरंगा

भारत का अरमान हमारी ये खाकी
जिसमें बसती जान हमारी ये खाकी

दिन भर करती भागदौड़
ये रातों को जगती है
गर्मी जाड़ा बारिश आँधी
सबकुछ ये सहती है



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाकी करती नहीं शिकायत
ना खाकी रोती है
पहरेदारी खाकी करती
तब दुनिया सोती है

छूट गया घर-बार मगर
ड्यूटी पर रहती खाकी
दर्द बहुत जीती पीती
कुछ भी ना कहती खाकी

दुश्मन को ऐलान हमारी ये खाकी
सच्चा है बलिदान हमारी ये खाकी

हार नहीं मानी खाकी ने
कभी ना पीछे भागी
सीने पर गोली खाई
सीने पर गोली दागी

अमन चैन के हर दुश्मन को
खाकी सबक सिखाती
प्यार मोहब्बत भाईचारा
खाकी सदा बढ़ाती

उन्मादी आतंकी मंसूबों को
धूल चटाती
खाकी का इतिहास अमर खाकी फिर
फिर दोहराती

यही आत्मा प्राण हमारी ये खाकी
दिल में हिंदुस्तान हमारी ये खाकी
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# शब्द-शब्द सावन
# अक्षर-अक्षर बरसातें होंगी

शब्द-शब्द सावन अक्षर-अक्षर बरसातें होंगी
मंच सजा है गीतों का गीतों पर बातें होंगी

छंद की देहरी सोच का आँगन
सुर लय ताल की गंगा
माँ वीणा पाणी का घर जहाँ
गूँजे शब्द मृदंग

सृष्टि सृजन की धारा पावनी कभी ना घातें होंगी

बच्चन पंत प्रसाद निराला
महादेवी की भूमि
यह महनीय धरा जिसकी रज
कैलाशों ने चूमी

रस रंगों में खिले हुए दिन डूबी रातें होंगी

गीत गोपालों की बंशी
गीतों को टेर रही है
गीत मंत्र का जाप गीत की
माला फेर रही है

गीतों की श्रद्धा से सुवासित सब सौगाते होंगी

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# राखी

प्रेम पगी सावनी पूर्णिमा रिश्तों के संसार की
बहना तुझको लाख बधाई राखी के त्यौहार की

राखी बस त्यौहार नहीं ये है
रक्षा का बंधन
जान रहा हूँ है अटूट धागों का
ये गठबंधन

डोर शाश्वत निश्छल निर्मल वचनों की ये प्यार की

याद तो होगा बचपन तुमको
वो हँसना वो रोना
इस छोटे का ध्यान वो रखना
वो ग़लती पर धोना

डाँट मार कुछ मिनटों, यादें फिर घंटों मनुहार की

वक़्त के संग मज़बूत हुए रिश्ते
दूरी से क्या
आना-जाना कम ज्यादा की
मजबूरी से क्या

बना रहे यह नेह सदा यूँ
कृपा रहे करतार जी

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# भारत की मुस्कान तुम्हीं हो

सीमाओं का मान तुम्हीं हो
घर के सुख की शान तुम्हीं हो
नभ जल धरती बाहर-भीतर
भारत की मुस्कान तुम्हीं हो

डूबती नब्ज़ का होश तुम्हीं हो
लहू में भरता जोश तुम्हीं हो
कठिन काल कैसी भी चुनौती
हर मन का संतोष तुम्हीं हो

दुःख संकट में आस तुम्हीं हो
जयहिंद का एहसास तुम्हीं हो
कभी ना टूटा ना टूटे जो
अटल-अडिग विश्वास तुम्ही हो

ओर तुम्हीं हो छोर तुम्हीं हो
है अटूट जो डोर तुम्हीं हो
अंधियारे को हरने वाली
उम्मीदों की भोर तुम्हीं हो

माँस तुम्हीं हो हाड़ तुम्हीं हो
पत्थर और पहाड़ तुम्हीं हो
डर जिससे डर-डरकर भागे
असली वही दहाड़ तुम्हीं हो



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेम तुम्हीं अनुराग तुम्हीं हो
गीत तुम्हीं हो राग तुम्हीं हो
धरती जिससे महक रही है
फूल तुम्ही वो बाग तुम्हीं हो

तुम्हीं हो पगड़ी ताज तुम्हीं हो
तुम्हीं मान हो लाज तुम्हीं हो
तुम्हीं हमारा बीता कल थे
तुम्हीं भविष्य हो आज तुम्हीं हो

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## जेठ में नैनीताल

नदी पहाड़ी झरना सागर
ताल हुए जाते हैं
याद तुम्हारी जेठ में
नैनीताल हुए जाते हैं

हँसी तुम्हारी बाहर भीतर
कितना भर जाती थी
कई बरस की टिकी उदासी
पल में मर जाती थी

चुप्पी तोड़ के भीतर की
वाचाल हुए जाते हैं

छुआ-छुअल्ली आइस-पाइस
यादों वाली दुनिया
हुए नहीं जो पूरे अब तक
वादों वाली दुनिया

वक्त के कैलेंडर का बीता
साल हुए जाते हैं

दो का एक टिफिन हो जाता
छुप-छुपकर खाते थे
बढ़ जाता था स्वाद अजब
खुशबू से भर जाते थे



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोम-रोम पुलकित औ झेंप के
लाल हुए जाते हैं

ऐसा नहीं कि तुम्हें ना ढूँढा
नहीं फ़िक्र थी हमको
भीतर रखकर बाहर-बाहर
सदा तलाशा तुमको

बनी है अब भी मांग वही
हड़ताल हुए जाते हैं

❑❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## मत समझाओ बाबा

फूट गई है आँख कहानी
मत समझाओ बाबा
नए-नए फिर ख़्वाब सुनहरे
मत दिखलाओ बाबा

झूठ को हमने सच ही माना
ऐसे बात कही थी
सच को परख नहीं पाए बस
माना बात सही थी

अब तक मान रहे थे पर अब
मत मनवाओ बाबा

चाँद को दिन में लाने की ज़िद
सूरज को रातों में
बहुत हुआ अब मत बहलाओ
तुम मन की बातों में

सच को पढ़ना सीख गए
मत झूठ छुपाओ बाबा

देखो दुनिया बदल गई है
गिन-गिन बदला लेगी
जो भी दिया है तुमने उसको
सूद समेत ही देगी

अब मसला है आर-पार
मत छुपो-छुपाओ बाबा
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## ये आँसू है
## इन्हें आँखों से बह जाने दो अच्छा है

ये आँसू हैं इन्हें आँखों से बह जाने दो अच्छा है
अगर कुछ चाहती कहना है कह दे तो अच्छा है

छुपा रखा था बरसों से इसे दिल की तिज़ोरी में
वो इक बंधन जिसे बांधे रखा सांसों की डोरी में

वो इक आहट की जिस पर चौंकना था लाज़मी अपना
हकीक़त की गली में देखना दिन में वो इक सपना

सितारे चाँद सूरज आसमां से रोज़ वो मिलना
सुबह भीगी हुई कोहरे में तेरा फूल का खिलना

नदी की वो रवानी धूप का आना पहाड़ों पे
अजब हलचल सी मच जाती थी छूते ही किनारों पे

वो शिकवे वो गिले सारी शिकायत याद है अब भी
वो जिनको सुन नहीं पाए कभी फ़रियाद है अब भी

मीनारें याद की ढहती हैं ढह जाने दो अच्छा है
ये आँसू हैं इन्हें आँखों से बह जाने दो अच्छा है

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## बोलो राम

बोलो राम कहाँ ढूँढोगे
शबरी झूठे बेर लिए
दुनिया आगे बढ़ी जा रही
मन में जब अंधेर लिए

प्रेम नहीं है त्याग नहीं है
रंग नहीं है राग नहीं है
भाव विह्वल कर दे भीतर से
ऐसा अब अनुराग नहीं है

माला फेर रही है दुनिया
मन में सौ-सौ फेर लिए

चेहरे पर सौ-सौ चेहरे हैं
मन की कोई थाह नहीं
स्वागत द्वार सजे ऊपर से
जाने की पर राह नहीं

चमक-दमक आई है मिलने
संग कूड़े का ढेर लिए

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## भीष्म

सुनो भीष्म आरोप है तुम पर
साफ़-सफाई दोगे ना
अडिग रहे तुम श्रेष्ठ रहे पर
जो कलंक है लोगे ना

कैसे धर्म से बंधे हुए थे
जो अधर्म हो जाता था
सत्य परखने की क्षमता थी
पर विवेक खो जाता था

खुद को इतना बांध लिए थे
इसीलिए ये होता था
न्याय तुम्हारी चौखट पर सिर
पटक-पटककर रोता था

पिता कभी माँ कभी वंश की
खातिर सब कर जाते थे
नीति नियम कर्तव्यों वाले
जाल तुम्हें हर जाते थे

एक नहीं हे भीष्म पितामह
ग़लती बारंबार हुई
न्याय सत्य की आपके रहते
अनदेखी औ हार हुई



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म-अधर्म ये नीति-अनीति
सबके तुम ज्ञाता थे
तुम ही थे असली रक्षक
तुम ही असली दाता थे

एक नहीं अवसर अनेक थे
काश कि तुम अड़ जाते
ताज़ लिए दरबार तुम्हारे
क़दमों में पड़ जाते

तुमको राज नहीं करना था
न्याय मगर हो जाता
जुड़ जाते कुछ पृष्ठ सुनहरे
ये काला खो जाता

फिर भी गंगापुत्र तुम्हारा
मन जीवन निर्मल था
कर्तव्यों की अविरल गंगा
पावन जिसका जल था

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# बेटा ठीक नहीं

जुगनू होना अच्छा है पर
हो तो आख़िर जुगनू ही
रोज़-रोज़ सूरज को गाली
देना बेटा ठीक नहीं

संस्कार भी होते हैं कुछ
अदब सलीका होता है
नियम कायदे अनुशासन
जीने का तरीका होता है
उड़ो-उड़ो तुम खूब उड़ो हाँ
लेकिन इतना ध्यान रहे
आसमान की ओर उठा मुंह
थूकना बेटा ठीक नहीं

अच्छा है उड़ लेते हो तुम
चमक तुम्हारे भीतर है
बाज़-बाज़ होता है लेकिन
तीतर आख़िर तीतर है
तुम भी घने अंधेरे में उम्मीद की
लौ हो पर फिर भी
अंधियारा हरते सूरज से
कुढ़ना बेटा ठीक नहीं



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हँसी बिखेरो खुशी बिखेरो
जब तक हो इस दुनिया में
याद रखेगी तभी ये दुनिया
तुमको भूल-भुलैया में
सूरज की दुनिया ही अलग है
उससे होड़ बेमानी है
सूरज है तो है ये दुनिया
भूलना बेटा ठीक नहीं

मौलिकता अच्छी होती है
बेशक मिट्टी कच्ची हो
टूटी-फूटी भाषा से क्या
अगर कहानी सच्ची हो
लीक बनाओ नई होड़ में
पड़ना ही बेमानी है
अतुलनीय-अनुपम सूरज से
तुलना बेटा ठीक नहीं

चलते चलते यही कहूँगा
अच्छे बेहतर नेक बनो
अपनी करनी से मेहनत से
तुम लाखों में एक बनो
चम-चम चमको उड़ो-उठो
एक चेहरा बनकर छा जाओ
स्वयं फलो-फूलो दूजे दम
फूलना बेटा ठीक नहीं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## हिंदुस्तान

आज़ादी आई कैसे है मैं तुमको बतलाता हूँ
सच्ची वो तस्वीर हिंद की आज तुम्हें दिखलाता हूँ
एक बरस में नहीं मिली ना मिली हमें कुछ वर्षों में
सदियाँ बीत गईं थी आज़ादी वाले संघर्षों में
शीश कटे गुरुओं के न जाने कितने फांसी झूल गए
हिंद के लोगों भूले से भी कभी न कहना भूल गए
आज भी देखो देख रही दुनिया उनकी कुर्बानी को
ख़ून बहे सरहद या भीतर आँख से बहते पानी को
सीना फटता माई-बाप का देश ये सारा रोता है
जब-जब अपनी संतानों को यह देश हमारा खोता है
आज़ादी यूँ मिली नहीं दे दी कितनों ने जान
हिंदुस्तान-हिंदुस्तान-हिंदुस्तान मेरी आन-बान हिंदुस्तान!

अट्ठारह सौ सत्तावन को कभी भूल ना जाना
वीर बहादुर मंगल पांडे का इक दीप जलाना
सहम गई अंग्रेजी सेना ऐसा पीर दिया था
मंगल की इक-इक गोली ने सीना चीर दिया था
अलख जगी थी आज़ादी की ज्वाला भड़क उठी थी
तन-मन और भुजाएँ देश की सचमुच भड़क उठी थी
बेग़म हज़रत महल लियाकत मौलवी गरज उठे थे
तात्या टोपे नाना साहेब मिलकर बरस उठे थे
शाह ज़फर अजीमुल्लाह ख़ान बहादुर ने हुंकार भरी
झांसी की रानी आई अंग्रेजी सेना कांप उठी
लहराई तलवारें गोरी सेना बिखर गई थी
चेहरे उतर गए उनके या गर्दन उतर गई थी
भारत के कण-कण से बोलता है अब तक बलिदान
हिंदुस्तान-हिंदुस्तान-हिंदुस्तान! मेरी आन-बान हिंदुस्तान!



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोस, भगत, बिस्मिल, आज़ाद के बलिदानों को याद करो
जुल्मी अंग्रेजों के इक-इक फ़रमानों को याद करो
याद करो सहदेव को फिर से बटुकेश्वर दत्त याद करो
अशफ़ाक उल्ला, तिलक, गोखले और लाजपत याद करो
देख हौसला लालों का गोरों का माथा घूम गया
हँसते-हँसते हर बलिदानी जब फंदे को चूम गया
बापू ने भी अलख जगाई चाचा ने भी धार दिया
गोरों की सत्ता को हिंसा के बाणों ने मार दिया
नरम-गरम दल जो भी कह लो सबने था बलिदान दिया
पूरी दुनिया में भारत को मान दिया सम्मान दिया
गूँज रही है आज भी आज़ादी की मीठी तान
हिंदुस्तान-हिंदुस्तान-हिंदुस्तान! मेरी आन-बान हिंदुस्तान!

सैंतालिस में बलिदानों का हमको प्रतिफल प्राप्त हुआ
बीती काली रातें आज़ादी का नया प्रभात हुआ
कभी जो अपने साथ-साथ था हुआ पड़ोसी अपना
बैठे-बैठे दिन ही दिन में लगा देखने सपना
बाज़ न आया हरकत से अक्सर धोखे से वार किया
छुप-छुपकर रातों में उसने सीमाओं को पार किया
पूरी दुनिया ने देखा दुश्मन के हौसले टूट गए
खड़े रह गए टैंक पड़ोसी के छक्के भी छूट गए
जब-जब आई विपदा हमें संभाला इन्हीं शहीदों ने
लाज रखी भारत की विक्रम बत्रा और हमीदों ने
युगों-युगों तक भारत का यूँ ही हो गौरव गान
हिंदुस्तान हिंदुस्तान-हिंदुस्तान! मेरी आन बान हिंदुस्तान!



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीमा पर धोखेबाज़ी है भीतर भी गद्दारी है
भ्रष्टाचार गरीबी वाली बढ़ती हुई बीमारी है
काम चाहिए नौजवान को और किसान को रोटी
काले धन पर भी अंकुश हो बात नहीं ये छोटी
मान मिले बेटी को देश में फिर से निर्भया ना हो
जात-पात-हिंसा में डूबी कहीं बस्तियाँ ना हो
वीर सिपाही सैनिक सीमाओं पर जान लुटाते हैं
इसी तिरंगे की ख़ातिर वो अपना शीश चढ़ाते हैं
हम पर भी ज़िम्मेदारी है यह गणतंत्र हमारा है
एक रहें हम नेक रहें हम यही हमारा नारा है
आज हो रहा पूरी दुनिया में अपना गुणगान
हिंदुस्तान-हिंदुस्तान-हिंदुस्तान! मेरी आन-बान हिंदुस्तान!

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## शैया गीतों वाली

शब्दों वाली माला होगी
शैय्या गीतों वाली
कविता वाली अग्नि होगी
खुशबु ग़ज़लों वाली

देह छूटी है प्राण गए हैं
शब्द सदा गूँजेंगे
युगों-युगों तक 'नीरज' तुमको
अर्थ यहाँ पूजेंगे

शब्द ऋषि थे साधक थे तुम
तुम थे गंगा वाले
तुम भारत में भारत तुममें
सदा तिरंगा वाले

युग ध्वनि थे तुम तुम धड़कन थे
तुम थे गीत शिरोमणि
भाव गुरू थे संप्रेषण थे
तुम थे मीत शिरोमणि

कालजयी हो सदा रहोगे
हम सबके इस मन में
सदियाँ देख सकेंगी तुमको
गीतों के दर्पण में

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# इंटरनेट

नशा कहूँ मैं पागलपन या कहूँ इसे मैं रोग
इंटरनेट के नेट में ऐसे उलझ गए हैं लोग

ख़बर नहीं है आस-पास की हाल जहाँ के लेंगे
उल्टे-सीधे बेबुनियादी मैसेज बम भेजेंगे

तर्क नहीं है कोई अपना कोई सोच नहीं है
भले-बुरे का फ़र्क नहीं कोई संकोच नहीं है

घोर विरोधी घोर समर्थक सीधे बँटे हुए हैं
नब्बे फीसद आँख गड़ाए दिन भर डटे हुए हैं

शब्द अर्थ के तीर नहीं तरकश तर्कों से ख़ाली है
क़लम मना कर दे लिखने से जो देते गाली है

जय होती है फिक्स यहाँ पर फिक्स पराजय होती है
सही ग़लत की पंचायत हर बात यहाँ तय होती है

वही कि जिनको पता ना खुद का आधा अधूरा आता है
खेल कला साहित्य संस्कृति राजनीति का ज्ञाता है

व्यू लाइक कॉमेंट शेयर से मानक तय हो जाते हैं
झूठ के जंगल में सच के जैसे रस्ते खो जाते हैं

कैसे कहें तरक्की जिसने नफरत और बढ़ाई है
हमें बांट टुकड़ों में जिसने दुनिया नई सजाई है
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## बादल

होंगे खूब घनेरे काले-काले बादल बोला था
भीग-भीग हम हो जाएँगे सारे पागल बोला था

हम भी आस को बांधे-बांधे ऊपर ताक रहे थे
सुबह-शाम दिन-रात इसी ख़्वाहिश में जाग रहे थे

आँधी आई झूठेपन की बाढ़ वायदों वाली
संकट के बादल मंडराए चमकी बिजली काली

ताल-तलैया सूख रहे सब सूख रही हैं नदियाँ
भरे हुए सागर ने लील लीं सारी छोटी खुशियाँ

सावन जेठ हुआ जाता है तपिश सही ना जाए
ऐसी मार पड़ी मौसम की सुनी-कही ना जाए

अर्थ, अनर्थ की ओर जा रहा कुछ उपाय ले आओ
बातें-वातें बहुत हुईं अब अच्छा कर दिखलाओ

हरे-भरे हों खेत फूल पत्तों से पेड़ भरे हों
डाली लदी फलों से पंछी देखो नहीं डरे हों

आसमान हो साफ़-साफ़ शंकाएँ दूर भगाओ
घर-घर गूँजे कलरव गीत खुशी के हमे सुनाओ

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# गौरी भी है, सीता भी है, दुर्गा-चंडी-काली है

खिली चाँदनी मुस्कानों संग भरे ताल के जैसा है
सूरज चाँद सितारों से इक भरे थाल के जैसा है

कभी-कभी चुप रहती लेकिन कभी-कभी कह जाती है
घर-बाहर है मुखर मगर अक्सर कुछ-कुछ सह जाती है

असमंजस में कभी-कभी कुछ बोल नहीं पाती है
खुलकर कहना चाहती है लब खोल नहीं पाती है

उम्मीदों से भरी हुई है नया सोचने वाली है
गौरी भी है सीता भी है दुर्गा चंडी काली है

आसमान मुट्ठी में होगा इसके हँसकर कहती है
शोख  नदी सी कल-कल करती अविरल बहती रहती है

आँखों में सपने सूरज के जुगनू जैसे चमक रहे
हँसी तुम्हारी यूँ ही बिखरे यूँ ही उसकी खनक रहे

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# झाँसी वाली रानी

रणकौशल के रक्त में डूबी सुन लो एक कहानी है
पुण्यभूमि भारत पर मर-मिटने की असल कहानी है
न्योछावर कर दिया प्राण को ऐसी अमिट कहानी है
भारत के कण-कण में ज़िंदा झाँसी वाली रानी है

घुटने टेक नहीं सकती मैं मन में ऐसा ठानी वो
लोहा लेती रही बराबर कभी हार ना मानी वो
अंग्रेजों के आगे झुकना उसने नामंजूर किया
युद्ध हुआ तो अंग्रेजों के अहम को चकनाचूर किया

मुट्ठी भर रानी की सेना ने ऐसी हुँकार भरी
धूप और बंदूक लिए अंग्रेजी सेना काँप उठी
थर-थर थर-थर लगी काँपने अंग्रेजों की फौज बड़ी
रानी की तलवार के आगे गोरी फौज अवाक् खड़ी

हार नहीं मानी लक्ष्मीबाई ने था बलिदान दिया
मान दिया पूरी दुनिया में भारत को सम्मान दिया
आहुति दी हँसते-हँसते देश को स्वाभिमान दिया
आज़ादी की नींव रखी और हमको हिंदुस्तान दिया

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## कैसे हो पहचान

कैसे हो पहचान बताओ कैसे हो पहचान
इक चेहरे पर सौ-सौ चेहरे लिए फिरे इंसान

रंग बदलता ऐसा पल-पल मौसम गिरगिट हार गए
झूठे वादे छल-छछंद मक्कारी से ये मार गए

हैरत में है इनकी हरकत से देखो भगवान

लालच-लिप्सा काम-क्रोध मद-मुद्रा में ये डूबे हैं
वाणी में अमृत विषधर से मन में मंसूबे हैं

इतना ज़्यादा उलट-पलट इन्हें सका न कोई जान

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# कलाम सी संतान

आँखों में आँसू है लेकिन मस्तक गर्व से ऊँचा है
भारत के चप्पे-चप्पे ने तुमको दिल से पूजा है

रोम-रोम से तेरे हिंदुस्तानी खुशबू आती थी
पूरी दुनिया में भारत की मिट्टी तुम्हें सुहाती थी

लोभ-लालसा-लालच के दानव ना तुमको छू पाये
इसीलिए धरती अंबर दुनिया ने तेरे गुण गाए

न्योछावर कर दिए स्वयं के सुख-सरिता-सागर तुमने
क्षण-प्रतिक्षण दे दिया देश को भरा मान गागर तुमने

जो कि नहीं तुम रुके नहीं तुम परमाणु संपन्न किया
दुनियाभर के आकाओं को पल में तुमने सन्न किया

भारत का मस्तक ऊँचा कर दुनिया में सम्मान दिया
दुश्मन की छाती पर चढ़ के जैसे तिरंगा तान दिया

मान तुम्हीं सम्मान तुम्हीं इस भारत की पहचान हो तुम
नानक बुद्ध कबीरा ईसा राम हो तुम रहमान हो तुम

कण-कण भारत की भूमि गुणगान तुम्हारा गाएगी
हो 'कलाम' जैसी संतानें हर माँ यही मनाएगी

तुम सपूत सच्चे भारत के सदा सभी को ध्यान रहे
अजर-अमर हो नाम तुम्हारा जब तक हिंदुस्तान रहे
□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सोचा तुम पर गीत लिखूँ

सोचा तुम पर गीत लिखूँ पर
सुनो इरादा छोड़ दिया
गीत पे गीत नहीं लिख सकता
और क़लम को तोड़ दिया

हवा सी चंचल मन सी निर्मल
हिरणा आँखें मन गंगाजल
तीज पर्व त्योहार ऋतों सी
झूला सावन बरखा बादल

क्या-क्या लिखते क्या-क्या कहते
सोच को हमने मोड़ दिया

खुले किवाड़ों सी मुस्कानें
भीतर जैसे जंगल-जंगल
मोहन की मीरा के जैसी
पीती जाती पीर हलाहल

कुछ-कुछ जादू कुछ तिलस्म सा
जो भी है बेजोड़ दिया

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## यादें

कोहरे में लिपटी यादें फिर
ताने मार रही हैं
तुम्हें भूलने की कसमें
यादों से हार रही हैं

हम कितना खुलकर मिलते थे
बातें होती थीं
शीत लहर में गर्म अंगीठी
रातें होती थीं

चुभती हैं यादें लेकिन
बरसों से यार रही हैं

चाँद भी खुलकर हँसता था
तारे भी खिलते थे
हवा प्यार की बहती थी
हम-तुम जब मिलते थे

आज नहीं लगती आँखें जो
कल तक चार रही हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## कैसी-कैसी साज़िश

कैसी-कैसी साज़िश करने वाले आये हैं
कद-काठी से ज़्यादा जिनके काले साये हैं

लूट संगठित होती थी
खुलकर चोरी होती थी
क्या मजाल बोले कोई जो
बरजोरी होती थी

आज छिना है कौर खड़े तो देखो मुँह बाये हैं

चाँदी का चम्मच मुँह में दाबे
पैदा होते हैं
चीख-पुकारों की वादी में
चैन से पर सोते हैं

वही तमाशा खेल पुराना देखो फिर लाए हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# मौके पर गोल रहे हैं

कैसे हैं ये लोग ना जाने क्या-क्या बोल रहे हैं
कितने पानी में हैं भेद को खुद ही खोल रहे हैं

कब इनको क्या करना है
क्या इनको नहीं पता है
ग़लत हुई परवरिश या इनकी
खुद की कोई ख़ता है

बोल गए रौ में पहले अब पल-पल तोल रहे हैं

अपनी कोई समझ नहीं है
कोई ज़मीं नहीं है
सर पर ताज है बेशक दिल में
कोई कहीं नहीं है

साथ निभाने की कसमें मौके पर गोल रहे हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# भोले हैं

हमसे मिलने-जुलने वाले
कितने भोले हैं
बर्फ़ की चादर ओढ़ के मिलने
वाले शोले हैं

चेहरे पर कुछ होता उनके
मन में कुछ होता है
हँस-हँसकर तारीफ़ करेंगे
दिल भीतर रोता है

रंग सुनहरा लिए हुए
ज़हरीले गोले हैं

नब्बे प्रतिशत चुप रहते हैं
दस प्रतिशत खुलते हैं
ये ऐसे ताले हैं जो बस
मतलब पर खुलते हैं

बिकने को तैयार दुकानें
कब से खोले हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# भीतर से मरे हुए हैं

सावन की पहली बारिश है
पत्ते डरे हुए हैं
याद तुम्हारी ओढ़े ज़ख़्म
हमारे हरे हुए हैं

कितनी बातें कितनी यादें
जाने कैसे-कैसे पल
सौ-सौ प्रश्नों की आँधी है
एक न लेकिन कोई हल

कहना मुश्किल ख़ाली कितने
कितने भरे हुए हैं

साँसें अब भी आती-जाती
हंगामे करती हैं
झूठ-मूठ की हँसी को ओढ़े
बस ड्रामे करती हैं

खिले हुए गुलशन के फूल
भीतर से मरे हुए हैं

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# जीना मुश्किल है

डूब रही है नब्ज़ प्यार की
जीना मुश्किल है
पिला रहे हो जो घुट्टी तुम
पीना मुश्किल है

रंग हमारे जुदा-जुदा हैं
खुशबू जुदा-जुदा
गुलशन का मालिक क्यों अपनी
सुनता नहीं खुदा

तार-तार हो रही है चादर
सीना मुश्किल है

पक्की फर्श हमारी होगी
छत भी पक्की होगी
दिन दूनी और रात चौगुनी
बड़ी तरक्की होगी

शीश महल के ख़्वाबों को अब
जीना मुश्किल है

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# गाँव

साँसें भी मुश्किल लेना है जान ले रहा शोर
चलो गाँव की ओर चलें हम चलो गाँव की ओर
छूटा जब से गाँव, गाँव की याद सताती है
सुबह दोपहर शाम हमें हर याद रुलाती है
ऊपर था आकाश खुला हम तारे गिनते थे
दीदी-भैया चाचा-चाची सारे गिनते थे
सोने से पहले दादी से किस्से सुनते थे
जीवन को जीने के सच्चे मोती चुनते थे
मस्त हवा बहती एक झोंके में सो जाते थे
रोज़ ही सतरंगी सपनों में हम खो जाते थे
भोर वो सूरज की लाली वो चिड़ियों का आना
मधुर-मधुर संगीत वो उनका मिलकर वो गाना
हरे-भरे वो खेत-बगीचे बाग बुलाते हैं
मीठे जल के कुएँ हमें तालाब बुलाते हैं
मोर बुलाते हैं हमको वो गाय बुलाती है
गिनी-चुनी बैलों की जोड़ी बहुत सुहाती है
बूढ़े-बच्चे संबंधों के नेह बुलाते हैं
जिन डालों पर हम झूले वो पेड़ बुलाते हैं
वो घर का आँगन वो छोटी नहर बुलाती है
शिवजी का वह मंदिर छोर की नदी बुलाती है
आओ चलो, चलें गाँव को फिर-फिर से जी लें
ज़हर बांटती हवा छोड़ के फिर अमृत पी लें

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# बस घड़ी दो घड़ी का मिलन

बस घड़ी दो घड़ी का मिलन

बस घड़ी दो घड़ी का मिलन
जागरण के कई रात के
कितने मतलब निकाले गए
उनसे पहली मुलाक़ात के

कुछ कहा ना सुना सोचते रह गए
उनको देखा तो बस देखते रह गए
दूरियाँ कम हुई फिर भी ख़ामोश थे
बोलते वो रहे हम तो मदहोश थे

याद कुछ भी हमें ना रहा
सिलसिले थे वो किस बात के

आप मिलते नहीं भाग से मिल गए
फूल चाहत के खुशबू लिए खिल गए
मेरी वीरानियाँ मेरी तनहाइयाँ
बजने से वो लगीं बनके शहनाइयाँ

ज़िन्दगी और कुछ भी नहीं
खेल है दिल के शह-मात के

मन में लहरें उठीं तन ये सागर हुआ
तेरी यादों का लबरेज़ गागर हुआ
दिल ने माला जपी तेरी पावन हुआ
तप रही ज़िन्दगी में ज्यों सावन हुआ



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रास्ते थे कई मोड़ भी
मुड़ते कैसे बिना बात के

दिल धड़कता रहा दिन गुज़रते रहे
साँसे आई-गईं जीते-मरते रहे
ढूँढने थे गए खुद मगर खो गए
आँखों-आँखों में वादे कई हो गए

ज़िन्दगी चार दिन की मिली
वादे थे पर जनम सात के

सोचा ही था तुम्हें कि महकने लगे
लब सिले रह गए हम तड़पने लगे
सूनी आँखों में जुगनू चमकने लगे
ऋतु बदलने लगी हम बहकने लगे

तन-बदन भीग गाने लगे
गीत यादों की बरसात के

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## बाबा नानक

बाबा नानक तुम श्रद्धा हो सेवा हो सत्कार हो
राह दिखाते अंधियारों में हम सब के सरदार हो

रही कृपा जिस पर तेरी वो बाबा पार हुआ है
लाख मुसीबत दुःख तकलीफ़ें पर उद्धार हुआ है

सदियों से बाबा इस दिल ने माना तुम करतार हो

ननकाने का मान बढ़ाया दुनिया जान रही है
प्रेम का जो संदेश दिया वो दुनिया मान रही है

विश्व शांति का अर्थ तुम्हीं हो प्रेम का तुम आधार हो

ऊँच-नीच का भेद मिटाया सर्व-धर्म की थाती
बालाजी मरदाना जैसे मिले थे तुमको साथी

ज्ञान मंत्र दे दिया सत्य का मन में एक ओमकार हो

झूठ-मूठ आडंबर चोरी करती दुनिया रोती
सच्चा सौदा तुमने बताया मानव सेवा होती

पाप-लोभ से मुक्ति दिलाई तुम ही तारणहार हो

कीरत करना नाम को जपना वन्ड छको ये बोला
कर्म है क्या कर्तव्य क्या सेवा भेद तुम्हीं ने खोला

सदा करो सुमिरन उस प्रभु का तब ही बेड़ा पार हो



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारी का सम्मान सिखाया शिक्षा दी लोगों को
दूर किया छल-छंद जहां से ख़त्म किया ढ़ोगों को

यूँ ही कृपा बनाए रखना तुम तो पालनहार हो

परहित रहा समर्पित जीवन दशा दिशा दी तुमने
जप जी आशा की वाणी दी सदा कृपा की तुमने

तुम अशेष हो तुम अनंत हो हम सबका संसार हो

❑❑❑



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# ज़िन्दगी तेरे गले लगने का मौसम आ गया

ज़िन्दगी के हर ग्रहण को प्यार हम देते रहे
जो मिला जब भी मिला हँसकर सदा लेते रहे

इक शिकायत भी नहीं हमने ख़ुदा से की कभी
झूठ की बुनियाद वाली ज़िन्दगी ना जी कभी

फूल भी काँटे भी जो हिस्से में आए रख लिए
कड़वे-कसैले मीठे-खट्टे स्वाद भी हर चख लिए

हर वफ़ा के संग आई बेवफ़ाई देख ली
दूरियाँ नज़दीकियाँ और जग हँसाई देख ली

देख लीं आँखें, नज़र-नज़रे-नज़ारे गौर से
चाँद, सूरज आसमानों पर सितारे गौर से

पूछिये मत क्या नहीं है इस कहानी में अभी
आँसुओं की इक लड़ी है इस कहानी में अभी

अनसुनी है अनकही है, है बहुत उलझी हुई
लोग कहते हैं कहानी है तेरी सुलझी हुई

इक समुंदर में कई नदियों का पानी ज़िन्दगी
है कहानी में कई किस्से कहानी ज़िन्दगी

धूप की चादर को ओढ़े शाम जैसी ज़िन्दगी
हो गई पाकीजगी बदनाम जैसी ज़िन्दगी



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजपथ के नाम पर वनवास जैसी ज़िन्दगी
भोर के हिस्से में टूटी आस जैसी ज़िन्दगी

इस ज़िन्दगी से क्या कहें सुनती कहाँ है ज़िन्दगी
हम चुनें बेशक हमें चुनती कहाँ है ज़िन्दगी

रंग भी है रोशनी भी है महक और नूर भी
पास भी है ज़िन्दगी ये और थोड़ी दूर भी

ज़िन्दगी तेरे गले लगने का मौसम आ गया
रंज़ सारे भूलने मिलने का मौसम आ गया

फूल सारे खिल गये खुशबू से आलम भर गया
रोशनी के एक कतरे से अंधेरा डर गया

ज़िन्दगी तुझसे गिला कोई ना शिकवा याद है
आज भी यादों की महफ़िल तुझसे ही आबाद है

कर्ज़ है साँसों का तेरी, माँग लेना जब हो मन
एक बस आवाज़ देना और ले जाना ये तन

□□□



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजपथ के नाम पर वनवास जैसी ज़िन्दगी
भोर के हिस्से में टूटी आस जैसी ज़िन्दगी

इस ज़िन्दगी से क्या कहें सुनती कहाँ है ज़िन्दगी
हम चुनें–बेशक हमें चुनती कहाँ है ज़िन्दगी

– डॉ० श्लेष गौतम

आवरण चित्र : अजय जेटली

मूल्य 160/-

ISBN 978-81-947725-7-6

नवगीत संग्रह

Ink Publication
Prayagraj

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection